

खुले मुद्दे और दीपक के सामने नहीं पढना चाहिये ।

॥ जिनाय नमः ॥

सामायिक-प्रतिक्रमण सूत्र

(विधि सहित)

संग्रहकर्ता

कुम्भट विजयमल जैन

(जोधपुर निवासी)

प्रकाशक—

सिरहमलजी लालचदजी

पीपाड़ निवासी

(मारवाड़)

गुलेदगड़

—०—०—०—

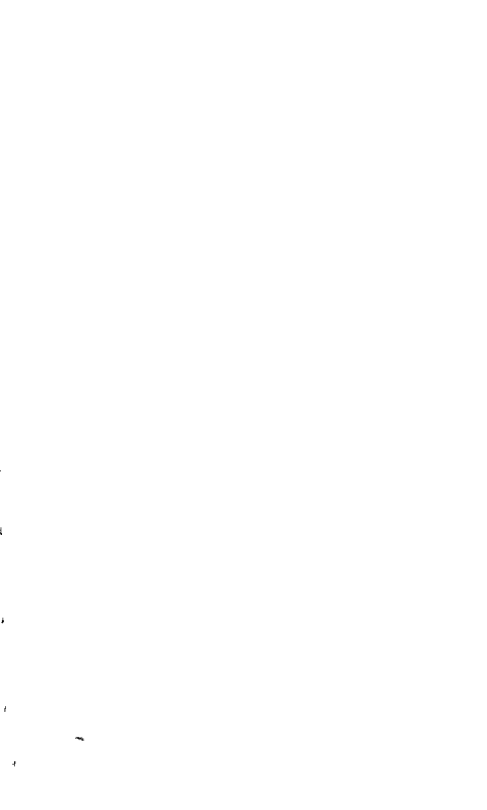
गूढ्य ज्ञानवृद्धि
प्रथमावृत्ति
प्रति ५००

५

{ सिर मम्पट २४२०
वि० साद १६८१
इ० सन १९२५



स्वर्गवामी सेठ मिरमलजी मुया पीपाड़ निवासी



परस्तावना ।



प्रिय बन्धुओं ! देखो जैन धर्म की कैसी अच्छी रीतियाँ हैं और ज्ञानियों ने कैसे कैसे सहज रस्ते पापसे बचने के लिये बताया है ऐसा विचार कर मनुष्यमात्र को चौदह नियम, चारह व्रत और सामायिक प्रतिक्रमण अवश्य धारण करना चाहिये क्योंकि इनके करने से पाप न्यून होजाता है ।

प्रिय भाइयों ! ऐसा योग पूर्ण पुण्य से मिलता है । मनुष्य जन्म, आर्य्य क्षेत्र, उत्तम कुल जैन धर्म यह सब पाया है तो जा बने सो करलो, बारबार ऐसा योग मिलना कठिन है ।

आपका:—

सिरेमल लालचंद मूथा.

पीपाड़ निवासी (भारवाड़)

गुलेदगढ

॥ श्री जिनायनमः ॥

सूचना ।



यह पुस्तक यत्न से रखें

जयणां से बाँचें ।

काना, मात्रा, अनुस्वार, इत्स, दीर्घ अशुद्ध टूटी लिख्यो ह्यो, विद्वान कृपाकर सुधार लेवें प्रसिद्धकर्ता क नम्र विनती है ।

पुस्तक के कई पृष्ठों के नीचे छोटे टाइप में सूचना है पाठकगण उनका उपयोग करें । पुस्तक में यदि कोई अशुद्धि रह गई होवे तो पाठक गण शुद्ध कर पढ़ेंगे और सूचित करेंगे, जिससे आगामी संस्करण में ठीक जावेगी । विजयमलजी जैन को धन्यवाद है जिन्होंने इस का संग्रह किया है ।

आपका:—

सिरेमल लालचद

पीपाड़ निवासी (मारवा

गुले

(क)

अनुक्रमसूचिका ।

विषय	पृष्ठ
नवकार मंत्र	१
विक्रयुक्तोका पाठ	१
शरियावहिया का पाठ	२
तस्स उत्तरी का पाठ	३
लोगस्स का पाठ	४
सामायिक लेने का पाठ	५
नमोत्थुण का पाठ	६
सामायिक पारने का पाठ	७
सामायिक पढ्या पछे ऐमा पाठ कहना	७
सामायिक लेने की विधी	८
„ पारने „	८
इच्छामिण भते का पाठ	१०
इच्छामि ठामि का पाठी	१०
आगमे तिविहे का पाठ	११
दसण धी समाकित् का पाठ	१२
बारे व्रत और उनके अतिचार	१२
सलेखण की पाटी	१६
तस्स धमस्स की पाटी	१६
तस्स मग्गस्स की पाटी	२०
चत्तारी मगल का पाठ	२०

अठारे पापस्थानक का पाठ	..	
खमासण की पाटी	.	
पच, पदां की वदना		
अनत चौतीसी स्तवन	...	
आयरिय उवज्झाए का पाठ	.	
आवकों से चमत चमावणा करने का पाठ	.	
चोरासी लाख जीवयोनि का पाठ	...	
सर्व जीवराशि चमाने का पाठ	...	
समुच्चय पचकखाण का पाठ		
प्रतिक्रमण करने की, विधि	.	
चौवीसी स्तवन	...	
२४ तीर्थकरों के नाम	..	३
२० विहरमान के नाम	...	३
११ गणधरों के नाम	...	३
१६ सती के नाम	...	४
चौदह नियम	...	४
श्रीपूज्य पचक समन्त्र प्रातःस्मरणीय प्राकृत स्तोत्रम्		४३
रीष्टनेमीनाथ भगवान का हालरीया	...	४४
श्री गोतम स्वामी का स्तवन		४५
श्री शान्तिनाथजी का स्तवन		४६
चन्दा प्रभुजी का स्तवन	.	४७
लघु साधु वन्दना	..	४८
पूज्य श्री रतनचन्दजी महाराज रा गुणा री ढाल...		४९
मुनि भी चन्दनमलजी महाराज का स्तवन		५०

(ग)

पंचम पूज्य शोभाचन्दजी का स्तवन ..	५२
मुनिगुण स्तवन ...	५३
उपदेशक स्तवन	५४
पूज्य श्री शोभाचंदजी महाराज का स्तवन	५४
श्री नेमिनाथजी स्तवन .	५५
श्री पार्श्वनाथजी का स्तवन ...	५६
रतनजडीत को पालणो ..	५७
श्री जशु स्वामीजी का स्तवन ..	५८
श्री शांतिनाथजी रो जाप .	६१
श्री शांतिनाथ स्वामीजीनो छंद .	६१
श्री पारसनाथ स्वामीजीरो स्तवन	६२
श्री चन्दा प्रभूजीनो स्तवन	६४
श्री गौतम स्वामीजीनो छंद ...	६५
श्री चिन्तामणि पार्श्वनाथनो स्तवन ...	६६
छंद श्री आदिनाथजी ...	६६
कवित्त ..	६७
छंद पंच परमेष्टीनो ..	६८
श्री पार्श्वनाथजीनो स्तवन ...	६८
श्री हरकचदजी महाराज का गुण .	६९
श्री गौतम स्वामीनो स्तवन	७०
श्री चरणमलजी महाराजना गुण ...	७१
श्री सीतलनाथजीनो स्तवन	७२
श्री महावीर स्वामीनो स्तवन ...	७३
श्री पारश्वनाथजीनो स्तवन ...	७४

(घ)

(स्तवन उपदेशी)	...	७५
स्तवन उपदेशी राग विहाग	..	७५
श्री नेमनाथजीनो स्तवन	...	७६
स्तवन उपदेशी	..	७७
स्तवन लावणी	.	७७
स्तवन श्री नेमीनाथजीनो	.	७६
स्तवन उपदेशी		७६
स्तवन उपदेशी	...	८०
पूज्य श्री सोभाचन्दजी महाराज का गुण	..	८१
स्तवन श्री माहावीर स्वामीनो	.	८२
(अथ चौबीसी लिख्यते)	.	८३
स्तवन उपदेशी		८४
स्तवन मधु गुण लिख्यते	...	८५





❀ श्रीवीतरागाय नमः ❀

श्री सामायिक-प्रतिक्रमण सूत्र

अथ श्री नवकार मंत्र प्रारम्भ ।

शमो अरिहतायं । शमो सिद्धायं । शमो ध्यायरियायं ।
शमो उवज्झायण । शमो लोए सव्य साहूयं । एसो पच शमो-
कारो । सव्व पावप्पणा सणो । मगलाय च सव्वेसिं । पढस-
हवइ मगल ॥ इति ॥

तिक्खुत्तो का पाठ ।

तिक्खुत्तो (तीनवार), आयाहिण (ये हाथ जोड़ी ने जीमणा
कानखु डावा कानताई), पयाहिण (प्रदक्षिणा करीने), वदामि
(नमस्कार करता हू), नमसामि (मस्तक नमायने नमस्कार
करता हू), सकारेमि (सत्कार देता हू), सम्माणेमि (सन्मान
देता हू), कल्याणं (कल्याणकारी), मगल (मगलकारी),
देवय (धर्म देव समान), चेइय (छ फायका जीवने सुख-
दायक), पज्जयासामि (मन वचन काया करी ने सेवा करता
हू), मत्थएण वदामि (मस्तक करी नमस्कार करता हू) इति ।

इरियावहियाए का पाठ ।

इच्छाकारेण (तुम्हारी इच्छापूर्वक), सदिसह (आज्ञा कर तो) भगवन इरियावहिय (चालते मार्ग में जीव ने भारिया होय), पडिकमामि (निर्गतु छूँ) पछे गुरु कहे-पडिकमह (पापटालो-पछे शिष्य कहे) इच्छ (प्रमाण है), इच्छामि (इच्छा करता हूँ) पडिकमिउ (पाप कर्म से निवृत्त होने के लिये) इरिया (मार्ग में) वहियाए (जाता) विराहयाए (दुःख दिया होय) गमयागमये (जाता आता) पाणकमये (प्राणी ने पैर से चाप्या होय) वीयकमये (वीज ने चाप्या होय) हरियकमये (वनस्पति वगैरे नु चापी होय) उसा (ओस) उसिंग (कीडी नगरा) पणग (फूलण) दग (पानी) मट्टी (सचित्र मट्टी) मकड़ा (मकड़ी) सताया (जाला) सकमये (दावा हो) जे में (जो मेरे) जीवा (जीवों का) निराहिया (नाश हुआ हो) एगिंदिया (एक-इन्द्रिय जीव) तेइदिया (वेइन्द्रिय जीव) तेइदिया (तीन इन्द्रिय जीव) चउरिंदिया (चार इन्द्रिय जीव) पंचिदिया (पांच इन्द्रिय जीव) अभिहया (सामने आते मारा) वचिया (धूड़ आच्छादन हो गई हो) लोसिया (जमान पर मसला हो) सघाइया (सामल किया होय) सघट्टिया (सामल हुवे हो) परियाविया (परिताप उपजाया होय) किलामिया (खेद पहुचाया हो) उहविया (त्रास पहुचाया हो) ठाया उठाया (एक स्थान से दूसरे स्थान पर) सकामिया (सक्रमण किया हो) जीविआउ (जीवसे) ववरोविया (मुक्त किया हा) तस्स

तस्स उत्तरी का पाठ ।

तस्स उत्तरी करणेण (उसका फिर शुद्धि करने के लिए)
 पायच्छित्त करणेण (पापों को दूर करने के लिए) तिसोही कर-
 णेण (पुनः आत्मा को विशुद्ध करने के लिए) विसल्ली कर-
 णेण (शक्तियों को दूर करने के लिए) पात्ताण कम्माण (पाप
 कर्मों के) निग्घायणटाण (नाश करने के लिए) ठामि (एक
 स्थान पर रहकर) काउमग्ग (कार्योत्सर्ग करता हू) अन्नत्थ
 (इतना और) उमस्मिण्ण (ऊचे श्वास आने पर) निस्मिण्ण
 (नीचे श्वास होने पर) खासिण्ण (खासी के होने पर) छीवण्यं
 (छीक आने पर) जभाइण्ण (जमाई आने पर) उद्धुण्ण
 (डकार आने पर) तायनिसग्गेण (अधो तायु के निकलने से)
 भमलिए (चक्र आने पर) पित्त मुच्छाए (मुच्छा आने पर)
 सुहुमेहिं (सूक्ष्म) खल अगसचालेहिं (अग के संचालन होने
 पर) सुहुमेहिं खल सचालेहिं (खलार के आने पर) सुहुमेहिं
 दिट्ठिमचालेहिं (आख टमकारने पर) एवमाइएहिं (इत्यादि)
 आगारेहिं (दूमरी कई आगारों से) अमग्गो (मग न होगा)
 अतिराहियो (तिरावित न होगा) हुज्ज (होवें) में (मेरा)
 काउसग्गो (कार्योत्सर्ग) जाव (जयतक) अरिहताण भगवंताण
 (भगवत को) नमोकारेण (नमस्कार करके) नपारेमि (मे न
 पालु) ताव (तयतक) काय (काया को) ठाणेण (एक स्थान
 में) मोण्णिण (मौन में) उम्हाणेण (ध्यान में) अत्थाण (अपनी
 काया को) वोमिशामि (छोड़ता हू) इति ।

लोगस्स का पाठ ।

लोगस्स (लोग में) उज्जोयगरे (उद्योतकरनेवाले)
 भम्मत्तिथयरे (धर्म तीर्थके करनेवाले) जिणे (राग द्वेष को
 जीतनेवाले) अरिहते (श्री अरिहत को) किच्चइस्स (कीर्त्ति
 करता हु) चउवीसपि (चौवीस तीर्थकर) केवली (केवल-
 ज्ञान के धारक) उसम (श्री ऋषभदेवजी को) मजियच
 (और अजितनाथजी को) वंदे (वदना करता हु) संभव
 (सभमनाथजी को) मभिण्णदंण (अभिनन्दनजी को) च
 (और) सुनइच (श्री सुमतिनाथजी को) पउमप्पह (पद्म-
 प्रभुजी को) सुपास जिण्णच (जिनवर और) चदप्पह (चन्द्र
 प्रभुजी को) वदे (वदना करता हु) सुविहिं च (सुविधिनाथ
 जीको और) पुष्फदत्त (और पुष्पदत्तजीको) सयिल (शीत-
 लनाथजी को) सिज्जस (श्रेयांसनाथजी को) वासुपुज्जच
 (वासपूज्यजी को और) विमल (विमलनाथजी को) मणत्त
 च (अनन्तनाथजी को और) जिण (रागद्वेषके जीतनेवाले)
 धम्म (धर्मनाथजी को) सत्ति च (शक्तिनाथजी को और)
 वंदामि (वंदना करता हु) कुथु (कुथुनाथजीको) अरच
 (अरनाथजी को) मल्लि (मल्लिनाथजी को) वदे मुणिसुव्वय
 (मुनिसुवृतजी को) नमिजिण्णच (नेमनाथजी रागद्वेष को जीतने
 वाले को और) वदामि रिट्ठनेमि (अरिष्टनेमी को) पासं
 पार्श्वनाथजी को) तह (तथा) वद्धमाण च (महावीर को)
 एव (इस प्रकार से) मए (मैंने) अभित्थुआ (स्तुति की है)
 विहुय (जिन्होंने दूर करी है) रयमला (कर्मोंकी रज तथा

मल) पहीण (क्षय किया है) जरमरणा (जरा और मरणको)
 चउर्वासपी (एहवा चौबीसादि) जिणवरा (जिनवर) तित्थ
 यरा (सब तीर्थकर देव) मे (मेरेपर) पमीयतु (प्रसन्न हो)
 कित्थिय (कीर्त्ति के योग्य) वदिय (वदनायोग्य) महिया
 (पूज्य है) जे (जो) ए (यह) लोगस्त (लोग में) उत्तमा
 (उत्तम) सिद्धा (सिद्ध है) आरुग्ग (रोगराहित) वोहीलाभं
 (सम्यक्त्व का लाभ) समाहि (समाधि) वर (जो श्रेष्ठ है)
 मुत्तम (उत्तम) दित्तु (दो) चदेसु (चाद स) निम्मलयरा
 (अधिक निर्मल है) आर्ड्द्वेसु (सूर्य से) अहिय (अधिक)
 पयासयरा (प्रकाश करनेवाले) सागरवर (सागर में श्रेष्ठ)
 गभीरा (गभीर है) सिद्धा (सिद्ध) मिद्धि (मुक्ति) मम
 (मुझको) दिसतु (दो) ॥ इति ॥

सामायिक लेने का पाठ ।

करेमि (मैं करता हू) भते (हे पूज्य !) सामाइयं (सा-
 मायिक) सावज्जं (सावध रूप) जोग (योग का) पच्चसामि
 (प्रत्याख्यान करता हू) जाव (जनतक) नियम (नियम है)
 पज्जुवासामि (सेवन करता हू) दुविह (दो करण से) तिवि-
 हेय (तीन योग से) न करेमि (मैं करू नहीं) नकारेमि
 (मैं कराऊ नहीं) मणमा (मनसे) वयसा (वचन से) कायसा
 (काया से) तस्स (यह सावध रूप पाप का) भते (हे पूज्य)
 पडिक्कमामि (मैं प्रायश्चित्त करता हू) निंदामि (आत्म-निंदा
 करता हू) गरिहामि (गुरु की साक्षी से करता हू) अप्पाण
 (अपनी आत्मा को) वोसिरामि (पास से अलग करता हू) इति

नमोत्थुणं का पाठ ।

नमोत्थुणं (नमस्कार हो) अरिहताण (भी अरिहंतों को)
 भगवताण (भगवतों को) आइगराण (धर्म की आदि करने
 वालों को) तित्थंयराण (तीर्थ के करने वाले) सयमजु-धाण
 (स्वयमेव बाध हुआ है) पुरिसुत्तमाण (पुरुषों में उत्तम)
 पुरिसमीहाण (सिंह समान) पुरिमजरपुडरीयाण (पुरुषों में
 पुंडरीक कमल समान) पुरिस्वर (पुरुषों में श्रेष्ठ) गधहत्थीण
 (गध हस्ती समान) लोगत्तमाण (लोग में उत्तम) लोग-
 नाहाण (लोग के नाथ) लोगहियाण (लोग के हितैषी)
 लोगरड्ढाण (लोग में दीपक समान) लोगपज्जोयगराण
 (लोग में परम उद्योत करने वाले) अभयदयाण (अभय
 दान करने वाले) चक्खुदयाण (ज्ञानरूपी नेत्रों के देने वाले)
 मग्गदयाण (मोक्ष के बताने वाले) सरदयाण (सरण को
 देने वाले) जीवदयाण (सयम रूपी जीवन के दाता) बोहि-
 दयाण (बोध बीज को देने वाले) धम्मदयाण (धर्म के देने
 वाले) धम्मदेभियाण (धर्म का उपदेश करने वाले) धम्म-
 नायगाण (धर्म के नायक-नेता) धम्मभारहीणं (धर्म रूपी
 रथ के सारथी) वम्मजर (धर्म में श्रेष्ठ) चाउरत (चारगति
 के अन्त करने वाले) चक्कपट्टीण (चक्रवर्ती समान) दीवोत्ताण
 (संसार रूपी समुद्र में द्वीप समान) सरणगड्ढपइठाण (शर-
 णागतों की वत्मलता करने वाले) अप्पाहिहय (किमी से नाश
 नहीं होय) वरणाण (प्रधान ज्ञान) दसणधराण (दर्शन
 के धरने वाले) विघट्ठउमाण (चली गई है छत्रस्थानस्था जिनकी)
 जिणाण (जिन्होंने राग द्वेष को जीता है) जाययाण (दूसरों

को राग द्वेष के जीतने का उपदेश करते हैं) तिन्नाण (आप तिरे है) तारयाण (औरों को तारने वाले) बुद्धाण बोधयाण (आप तत्व जाना दूमरों को बोध देनेवाले , मुत्ताण मोय-गाण (आप कर्मों से छूटे और दूमरों को छुडाने वाले) सव्व लुण (सर्वज्ञ है) सव्वदासिण (सर्वदर्शी है) सिव (कल्याण रूप) मयल (अचल) मरुय (रोगरहित) मणत (अनत ज्ञानादि करी) मख्खय (क्षयरहित) मव्वावाह (दु खादि रहित) मयुणराप्पि (जिसका फिर जन्म नहीं है ऐसी जो सिद्ध गति है) सिद्धगई (मोक्ष है) नामधेय (नाम भी यही है) ठाण (स्थानक को) सपात्ताण (जो मोक्ष को प्राप्त हुए हैं) नमोजिणाण (नमस्कार को जिनेश्वर को) जियभयाण (सातभय जीत दिये हैं) ॥ इति ॥

॥ सामायिक पारने का पाठ ॥

नयमा सामायिक व्रत के रे विपै जे कोई अतिचार लागो होय तो आलोउ । मन, वचन, काया रा जो पाहु वे ध्यान प्रवर्ताया होय, सामायिक में मभालना नहीं कीधी हाय, अण पुगी पाडी होय, तस्स मिच्छामि दुक्कड ॥ दस मनरा दस वचन रा, चारे कायरा, चत्तास दोषा मायलो कोई दोष लागो होय तो तस्स मिच्छामि दुक्कड ॥ सामायिक में स्त्रीकथा, भक्तरथा, देश कथा, राजकथा, ए चार कथा मायली कोड कथा कीधी हाय तो तस्स मिच्छामि दुक्कड ।

॥ सामायिक पाड्या पछे ऐसा पाठ करना ॥

सामायिक समकाएण, फासिय, पालिय सोदिय, तीरिय,

किञ्चित्, आराह्यं, आणाए, अणु पालिय, न भवई तस्स
मिच्छामि दुक्कड ॥

॥ अथ सामायिक लेने की विधि ॥

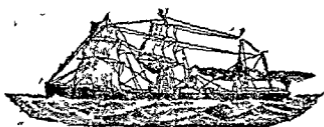
सामायिक कर्त्ता को चाहिए कि पहले भूमि पूजे । फिर
आसन विद्या, मुखवास्त्रिका मुख पर बांध प्रथम सचित्त को दूर
कर शुद्ध कपड़े धारण कर, दोनों हाथ जोड़, श्री गुरुदेव की
आज्ञा मांग "हरियावही" की पाटी "जीवियाओ ववरोविया तस्स
मिच्छामि दुक्कड" पूर्ण पाठ बोले । फिर "तस्सुत्तरी" की पाटी कहने
का उस्सग्ग करना, काउस्सग्ग में " हरियावहियाए " का सम्पूर्ण
पाठ मन ही मनमें कहना, फिर "नमो अरिहताणं" मनमें कहकर
काउस्सग्ग पाडना, फिर " लोग्गस्स " की पाटी कहना । फिर
" करेमिभते " की पाटी " जावनियम " तक कहीने आगल
मुहूर्त्त घालना हुये जितना घालना, फिर पज्जुवासामि से
" अप्पाण वोसिरामि " तक पाठ करना । पीछे डावा घुटने
को ऊचा कर, दोनों हाथ जोड़ " नमोत्थुण " का पाठ दो बार
उच्चारण करे । पीछे आमन पर बैठकर " नमोकार, तथा
बोलचाल " गुणना पढना ॥ इति ॥

सामायिक पारने की विधि ।

सामायिक पारने समय " हरियावही " की पाटी और
" तस्सुत्तरी " की पाटी कह काउस्सग्ग करना । काउस्सग्ग
में "लोग्गस्स" की पाटी मनमें कहना " नमो अरिहताण " कह
कर काउस्सग्ग पारना । फिर " लोग्गस्स " प्रगट कहना । दोय

नम्रतुण्य पूर्ववत् कहना । फिर “ नवमा सामायिक की पार्टी
और “ न भवइ तस्त मिच्छामि दुःखइ ” तक कहना । अतमें
वीन नमोकार कह कर उठना ॥ इति ॥

इति सामायिक सूत्र समाप्तम् ।



पठिक्रमण सूत्रम् ।

इच्छामिणं भते का पाठं ।

इच्छामिणं (मैं इच्छा करता हू) भते (हे भगवन्) तुम्भेहि (तुमारी) अमणुनाय समाणे (आज्ञा मागने) देवसी (दिवस संबंधी) पठिक्रमण (पाप का निवारण करने के लिए) ठामि (एक स्थान पर बैठता हू) दिवसि, (ग्यान,) दसण (दर्शन) चरित्ताचरित (चारित्र) तप, अतिचार चिंतणणार्थं (चिंतवना करने के लिए) करेमि काउस्सग्ग (काया की स्थिरतां) ॥ इति ॥

— इच्छामि ठामि की पाठी ।

इच्छामि ठामि काउसग्ग जो मैं देवसियो (दिवस संबंधी) अह्यारो (अतिचार) कओ (किया होय) काइओ (काया से) वाइओ (वचन से) माणसिओ (मन से) उस्सत्तो (सूत्र विहद्ध परूपणा की होय) उम्मग्गो (जिन मार्ग छोड़ने दुजो मार्ग पकड्यो होय) अकप्पो (अयोग्य वस्तु भोगी होय) अकरणिज्जो (अयोग्य कार्य कियो होय) दुज्झाओ (आर्त्त रौद्र ध्यान ध्यायो हो) दुव्विचिंतिओ (अशुभ कार्य मन में याद किया हो) आणायारो (नव अनाचार आचरवा जोग नहीं) अणिच्छियव्वो (इच्छा करना योग्य नहीं) असावग पावग्गो (धावक ने उचित नहीं) नाणे (ज्ञान ने विषे) तह (विमहिज) दसणे (समकित ने विषे) चरित्ता चरित्ते सए

(सूत्र सिद्धान्त के विषे) सामाङ्ग (समता रूप सामायक नै
 विषे) तिन्ह गुत्ताण (तीन गुप्ति न पाल्या होय) चउन्ह क-
 सायण (चार कपाय) पंचन्ह अणुञ्जयाण (पांच प्रकार का
 विरमण) तिन्ह गुणञ्जयाण (तीन प्रकार का गुणव्रत) चउ-
 न्ह सिक्खाञ्जयाण (चार प्रकार की शिक्षा) पारस विहस्स
 (चार प्रकार का व्रत) सावगधम्मस्स (श्रावक-सम्प्री) जख
 द्विय (देश के लिये भग किया होय) जविराहिय (सन के
 लिए भग किया होय) तस्स मिच्छामि दुक्कड्ढ ॥

॥ आगमे तिविहे का पाठ ॥

आगमे (सूत्र सिद्धांत) तिविहे (तीन प्रकार का) पनते
 (कहा) तजहा (ते कहे है) सुत्तागमे (सूत्र आगम) अत्था-
 गमे (सूत्र ना अर्थ) तदुभयागमे (सूत्र तथा तेहेनो अर्थ)
 एहवा भी ज्ञान के विषे जे कोई अतिचार लागो होय ते
 आलोउ, जवाइद (सूत्र आगा पाछा भएया होय) चच्चाभेलिय
 (उपयोग रहित भएया होय) हीणक्खर (ओछो अक्षर भएयो
 होय) अच्चक्खर (अधिक अक्षर भएयो होय) पयहीण (पद
 ओछो भएयो होय) विनयहीण (विनय रहित भएयो होय)
 जोगहीण (मन बचन काया से जोग ठाम, राख्या) घोसहीण
 (शुद्ध उच्चार रहित भएया होय) सुट्ठुदिन्न (शुद्ध ज्ञान, अ-
 विनीत ने दियो होय) टुट्ठु पडिच्छिय (अविनीत पने ज्ञान
 लियो होय) अकाले कयो सज्जामो, काले न कयो
 मज्जामो, अमज्जाए सज्जाइय सज्जाये न सज्जाय भएया

गुणता चिंतवता ने विचारता ज्ञान अने ज्ञानवंत की आशा-
तना कीनी होय तो तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ इति ॥

॥ दंसण श्री समकित का पाठ ॥

अरिहंतो महदेवो, जावज्जीव सुसाहुणो गुरुणे, जिण
पएणत्त तत्त ए सम्मत्त मए गहियं एवा श्री समकित के विषे
जे कोई अतिचार लागो होय तो आलोउ, जिन वचन में शका
आणी होय, पर दर्शनरी वांछा कीधी होय, फल प्रति संदेह
आएयो हो, पर पाखंडीरी प्रशसा कीधी होय, पर पाखंडी
से सस्त्व परिचय कीधी होय, तो मारा समकित रूप रत्नरे
विषे मिथ्यात्व रूप रज, मेल, खेह लागी होय तस्समिच्छामि
दुक्कडं ॥ इति ॥

वारे व्रत और उनके अतिचार ।

पाहिलो अणुव्रत—(साधुना पांच महाव्रतनी अपेक्षा छोटी
व्रत) धूलाओ (मोठा) पाणाइवायाओ (जीव मात्र नी हिंसा)
वेरमणं (छोड़ता हूँ), त्रसजीव, बेइदिय, तेइदिय, चउरिंदिय,
पचेदिय, बिन अपराधे जाणी प्रीछी आकुटी सकर्पी हणवारी,
बुद्धि करी ने हण हणावण का पचक्खाण जावज्जीवा दुविहं
तिविहेणं न करेमि न कारवेमि मनसा वयसा कायसा । (एवा
पहला धूल प्राणातिपात (जीवनी हिंसा) विरमण व्रत के
विषे जे कोई अतिचार लागो होवे तो आलोउं, रीस वसे गाढ़ा
बंधण धांध्या होय, गाढ़ा भाव धान्या होय, चामना छेद कीधा
होय, अति भार धान्या होय, भात पाणीना विच्छेद कीधा
होय तस्स मिच्छामि दुक्कड) ॥ १ ॥

द्विजो अणुव्रत—धूलाओ मोसावायाओ (झुठ चोलना)
 विरमण कम्मालिय (कन्या तथा वर सम्बन्धी झुठ) गोवा-
 लिय (गाय, भैंस आदि सम्बन्धी झुठ) भौमालिय (पृथ्वी
 के काम में झुठ) थापणमोसो (कोईनी स्थापण उलमवी)
 सूक ले कूड़ी साख, इत्यादिक मोट का झूठ चोलण का पच-
 कखाण जावज्जीवाए, दुविह तिनिहेण न करेमि न कारवेमि
 मनसा वयसा कायसा । (एवा इजा धूल मृपावाद विरमण
 व्रत के विषे जे कोई अतिचार लागो होय ता, आलोउ, सहसा-
 स्फारे कियी प्रति कूडो आल दीधो हाय, रह छानी वात प्रगट
 कीधी होय, अपनी स्त्री का मर्म प्रकाशया होय, मृपा उपदेश
 दीधा होय, कूड़ा लेख लिख्या होय तस्स मिच्छामि दुक्कइ) ॥२॥

तीजो अणुव्रत—धूलाओ अदिआदाणाओ (चोरी करना)
 निरमणं, खातर खिणी, गाठ छोड़ी, ताला पर कूची, वाट पाड़ी
 पड़ी वस्तु मोट की धरिणीयां सेती जांणी ने लेवण का पचकखाण
 जावज्जीवाए दुविह तिनिहेण न करेमि न कारवेमी, मनसा
 वयसा कायसा । (एवा तीजा धूल अदत्तादान विरमण व्रत
 के विषे जे कोई अतिचार लागो होय तो आलोउ, चोराई वस्तु
 लीधी होय, चोर ने साक दीधो होय, राज्य विरुद्ध कारज कीधो
 होय, कूड़ा तोल कूड़ा मापा कीधा होय वस्तु में भेक्त समले
 संखरी दिस्साय नरवरी आपी होप तस्स मिच्छामि दुक्कइ) ॥३॥

चोथो अणुव्रत—धूलाओ महुणाओ (मैथुन) विरमण,
 पोतारी स्त्री उपरांत मैथुन सेवण का पचकखाण, जावज्जीवाए
 देवता सम्बन्धी दुविह तिनिहेण न करेमि न कारवेमि मनसा

वयसा कायसा, मिनख तिर्जच सम्बन्धी एकविह एक विहेण न करेमि कायसा (एवा चौथा धूल भ्रुवदारा) (अपनी स्त्री) सतोप विरमण व्रत के विषे जे कोई अतिचार लागो होय तो आलोउ इत्तर थोडा काल राखीछ, गमन कीधा होय, अपगृही स, गमन-कीभाहाय, अनग क्रीडा कीधी होय, परायण्याव नातरा जोडिया होय कामभोग तीव्र अभिलाषा सेवियाहोय तस्स मिच्छामि दुक्कड ॥ ४ ॥

पांचवो अणुव्रत-धूलाओ परिग्रहओ (परिग्रह दालत) विरमणं, खेत घर की, रूपा सोना को, धनधान्य को, दुपद चौपद को, घर विखरा कां यथा परिमाण कीधा होय ते उपरात आपको करी परिग्रह राखण का पचक्खाण जावज्जीवाए एकविह तिविहेण न करेमि मनमा वयसा कायसा (एवा पाचवां धूल परिग्रह विरमण व्रत के विषे जे कोई अतिचार लागो होय तो आलोउं, खेत घर को रूपासोना, को धन धान्य को, दुपद चौपद को घर विखरा को यथा परिमाण कीधा है ते अतिक्रम्यो होय, तस्स मिच्छामि दुक्कड) ॥ ५ ॥

छट्टो दिशिविरमण व्रत-ऊंची नीची तिरछी दिशा को यथा परिमाण कीधो छै ते उपरात स्वइच्छायें जाई ने पांच आश्रव द्वार मेरण का पचक्खाण, जावज्जीवाए एकविह तिविहेण न करेमि मनमा वयसा कायसा (एवा छट्टा दिशिविरमण व्रत के विषे जे कोई अतिचार लागो होय तो आलोउ, ऊंची नीची तिरछी दिश को यथा परिमाण कीयो छै ते अतिक्रम्यो होय, एकदिश घटाई होय, एक दिश बढाई होय, सदेह पड़िया पंथ आगे चान्यो होय तस्स मिच्छामि दुक्कड) ॥ ६ ॥

सातमो उपभोग परिभोग विरमण व्रत—उल्लिखिया-
विहं (अग पूछना आदि विधि) दतणविहं (दातणविधि) फल
विह (फलविधि) अर्भंगणविह (तेल मालिस की विधि)
उपट्टणविह (उपट्टन आदि की विधि) मज्जणविह (स्नान की
विधि) वत्थविहं (बत्थविधि) विलेवण विह (विलेपन विधि (पुष्प-
विह पुष्प विधि) आभरण विह (आभूषण विधि) धूपविह (धूप
की विधि) पेजपिह (दुध आदि पीचा की विधि) भक्खणविह
(भक्षण की विधि) ओदनविह (चावल की विधि) सूपविह
(दाल की विधि) विगयविह (विगय की विधि) सागविह
(साग की विधि) माद्धुरविह (मधुर पदार्थ की विधि) जीमण
विह (जीमवानी विधि) पाणीविह (पानी की विधि)
सुख वासविह (सोपारी पान आदि की विधि) वाहनविह
(सवारी की विधि) सयणविह (पलग आदि सोने की
विधि) पन्निविह (पगरखी की विधि) सच्चित विह (सच्चित
की विधि) द्रव्यविह (द्रव्य की विधि) इत्यादिक छार्डस चोलां
की मरजाद कीधी छै ते उपरान्त उपभोग परिभोग भोगण का
पचक्खाण जाव्ज्जीवाए एगविह तिविहेण न करेमि मनसा वयसा
कायसा । (एवा सातवां उपभाग विरमण व्रत के विषै जे कोई
अतिचार लागो होय तो आलौउं, पचक्खाण उपरान्त सच्चित्त
को आहार कीधो होय, सच्चित्त प्रतिवद्ध को आहार कीधो होय,
अपक्क को आहार कीधो होय, दुपक्क को आहार कीधो होय,
तुच्छ औषधि भक्खण कीधा होय, थोड़ो खाय घणे नाखियो
होय तस्म मिच्छामि दुक्कडं) । इति ।

वयसा कायसा, मिनख तिर्जच सम्बन्धी इकविह इक विहेण करेमि कायसा (एवा चौथा थूल स्वदारा) (अपनी स्त्री सतोप विरमण व्रत के विषे जे कोई अतिचार लागो होय तो आलोउ इत्तर थोडा काल राखीसू गमन कीधा होय, अपगृह स गमन-कीधाहोय, अनग क्रीडा कीधी होय, परायाच्या नातरा जोडिया होय कामभोग तीव्र अभिलाषा सेवियाहोय तस्स मिच्छामि दुक्कड ॥ ४ ॥

पांचवो अणुव्रत-धूलाओ परिग्रहओ (परिग्रह दौलत विरमण, खेत घर की, रूपा सोना को, धनधान्य को, दुपद चौपद को, घर विखरा को यथा परिमाण कीधा होय ते उपरात आपको करी परिग्रह राखण का पचक्खाण जावज्जीवाए एकविह तिविहेण न करेमि मनसा वयसा कायसा (एवा पाचवां थूल परिग्रह विरमण व्रत के विषे जे कोई अतिचार लागो होय तो आलोउं, खेत घर को रूपासोना, को धन धान्य को, दुपद चौपद को घर विखरा को यथा परिमाण कीधा है ते अतिक्रम्यो होय तस्स मिच्छामि दुक्कड) ॥ ५ ॥

छट्टो दिशिविरमण व्रत-ऊंची नीची तिरछी दिशा को यथा परिमाण कीधो छै ते उपरात स्वइच्छायें जाई ने पाच आश्रन द्वार सेवण का पचक्खाण, जावज्जीवाए एकविह तिविहेण न करेमि मनसा वयसा कायसा (एवा छट्टा दिशिविरमण व्रत के विषे जे कोई अतिचार लागो होय तो आलोउ, ऊंची नीची तिरछी दिश को यथा परिमाण कीरो छै ते अतिक्रम्यो होय, एकदिश घटाई होय, एक दिश बधाई होय, सदेह पड़िया पथ आगे चान्यो होय तस्स मिच्छामि दुक्कड) ॥ ६ ॥

सातमो उपभोग परिभोग विरमण व्रत—उज्ज्वलिया-
विह (अग पूछना आदि विधि) दतणविह (दातणविधि) फल
विह (फलविधि) अम्भंगणविह (तेल मालिस की विधि)
उवट्टणविह (उवटन आदि की विधि) मज्जणविह (स्नान की
विधि) बत्थविह (बस्त्रविधि) विलेवण विह (विलेपन विधि) पुप्फ-
विह पुप्प विधि) आभरण विह (आभूषण विधि) धूपविह (धूप
की विधि) पेज्जपिह (दुध आदि पीवा की विधि) भक्खणविह
(भक्षण की विधि) ओदनविह (चावल की विधि) सूपविह
(दाल की विधि) विगयविह (विगय की विधि) सागविह
(साग की विधि) माळुरविह (मधुर पदार्थ की विधि) जीमण
विह (जीमवानी विधि) पानीविह (पानी की विधि)
सुख वासविह (सोपारी पान आदि की विधि) वाहनविह
(सवारी की विधि) सयणविह (पलग आदि सोने की
विधि) पन्निविह (पगरखी की विधि) सच्चित्तिह (सच्चित्त
की विधि) द्रव्यविह (द्रव्य की विधि) इत्यादिक छार्इस बोलां
की मरजाद कीधी छै ते उपरान्त उपभोग परिभोग भोगण का
पचक्खाण जावज्जीवाए एगविह तिविहेण न करेमि मनसा वयसा
कायसा । (एवा सातवां उपभोग विरमण व्रत के विपैजे कोई
अतिचार लागो होय तो आलोउ, पचक्खाण उपरान्त सच्चित्त
को आहार कीघो होय, सच्चित्त प्रतिबद्ध को आहार कीघो होय,
अपक्क को आहार कीघो होय, दुपक्क को आहार कीघो होय,
तुच्छ औपधि भक्खण कीघा होय, थोडो खाय घणो नास्वियो
होय सुस्म मिच्छामि दुक्कड) । इति ।

ए भोजन घकी कद्दाहिवे कर्मथकी पनरे कमांदान श्रावक
 ने जाणवा जोग छै पर आदरवा जोग नहीं, तजहा ते कह छै
 इंगालकम्मे, (आग का व्यापार लोहकारादि का कर्म) घष
 कम्मे (वन में घाम दरखतादि काटवा का कर्म) साडी कम्मे
 (गाढी आदि कराय ने बेचणा) भाडीकम्मे (ऊट, घोडा,
 आदि भाडा को व्यापार कीघो होय) फोडीकम्मे (खान सु-
 दाना, कर्षण कराना इत्यादि पृथ्वीका पेट फोडाना कुश्नाआदि
 कराना, कर्म कीघा होय) दतवाण्णिज्जे (दांतको व्यापार)
 लखवाण्णिज्जे (लाखनो व्यापार) रस वाण्णिज्जे (घी, तैल
 रसादि का व्यापार) केमवाण्णिज्जे (बाल चमड़ादि का व्यो-
 पार) विस वाण्णिज्जे (जीव घातक वस्तुनो व्यापार) जतपिल्लण
 कम्मे (कल धाणी आदिनो व्यापार) निल्लच्छण कम्मे (बलदा-
 दिक ने अकाववा, डाम दिराना) दग्गिदावणया (वन
 मेंमुख में लाय लगाना) सर दह तलायपरिसोसणया (तालाब
 आदि ने सोखावो) असई जण पोसणया (कुचाआदि हिंसक
 जीवने पोष्या होय) तस्समिच्छामि दुक्कड ॥ इति ॥ ७ ॥

आठमो अनर्थदंड विरमण व्रत—चउव्विहे (चार प्रकार)
 पण्णत्ते (प्ररूप्यो) तजहा, अवज्जाण चरिय (खोटा ध्यान-
 धरना) पमाय चरियं (प्रमाद करना) हिंसपयाणं (प्राण-
 हिंसा) पावकम्मो वएस (पापकर्म का उपदेश) एवा अनर्थ
 दण्ह सेवणरा पचक्खाण, जावज्जीवाए, दुविह तिचिहेण न
 करेमी न कारवेमि मनसा वयसा कायसा । (एवा आठवां
 अनर्थदंड विरमणव्रत के विये, जे कोई अतिचार लागो होय ते

आलोउ, कदर्प की कथा कीधी होय, भड कुचेष्टा कीधी होय,
 मुखर बचन बोल्या होय, अधिकरण जोडी मूकया होय,
 उपभोग परिभाग अधिका बधारया होय तस्समिच्छामि दुक्कडं ॥
 ॥ इति ॥ ८ ॥

नवमा सामायिक व्रत—सावजं जोगं पचक्खामि, जाव-
 नियम पञ्जुगसामी दुविह तिविहेण न करेमि न कारवेमि
 मनसा बयसा कायसा एवा मारी श्रद्धा परूपणा तो छै फरसण
 करू तेवारे सिद्ध । (एवा नवमा सामायिक व्रतके विषे जे कोई
 अतिचार लागो होय तो आलोउ, मन बचन कायारा जोग
 पाइवे ध्यान प्रवर्ताया होय, सामायिक में सम्भालना नहीं कीधी
 होय, श्रयपूगी पाडी होय तस्स मिच्छामि दुक्कड ॥ ९ ॥

दसमा देसावगासिक व्रत—दिन प्रति प्रभात थकी
 प्रारमी ने पूर्वादिक छः दिश की जेटकी भूमिका मोकली राखी
 छै ते उपरान्त स्वइच्छायें कायायें जई ने पांच आश्रव द्वार सेवण
 का पचक्खण । जाव अहोरत्त दुविह तिविहेण न करेमि न
 कारवेमि मनसा बयसा कायसा, ते माहिं द्रव्यादिक नेमकी
 मरजादा कीधी छै ते उपरान्त भोगणरा पचक्खण । जाव दिवस
 पञ्जुगसामि, एगविहं तिविहेण न करेमि मनसा बयसा कायसा
 एमी मारी श्रद्धा परूपणा तो छै फरसणा करू तेवारे सिद्ध ।
 [एवा दसमा देसावगासि व्रत के विषे जे कोई अतिचार लागो
 होय तो आलोउ. नेमी भूमिका थी वस्तु वारथी अणई होय
 मोकलाई होय, शब्दकरी रूपकरी पुद्गल नाखी आपो जणायो
 होय तस्स मिच्छामि दुक्कड ॥ १० ॥

इग्यारमा पोषध व्रत—अमण (आहार) पाणं (पानी) खाइमं (मेवादिक्) साइम (पान सुपारी आदि) का पच-
कखाण, अमम (मैथून) सेवण का पचकखाण, अमुक मण्ण
सोवन का पचकखाण, माला वग (गुलाल रंग आदि) विले-
पण का पचकखाण, सत्थ (हथियार) मुसलादिक सावज्ज
(सावध) जोग का पचकखाण, जात्र अहोरत्तं पज्जुवासामि,
दुविह तिप्पिहेणं न करेमि न कारवेमि मनसा वयसा कायसा,
एवां मारी श्रद्धा प्ररूपणा तो छै फरसणा करू तेवारे सिद्ध ॥

एनाइग्यारमा पोषध व्रत के विषै जे कोई अतिचार लागो होयतो
आलोउ, पोसा में सज्जा सथारो न जोयो होय, मार्ग तरे जोयो होय
न पूज्यो होय, माठी तरे पूज्यो होय, उचार, पासवण भूमिका न
जोई होय, माठीतरे जोई होय, न पूजी होय, माठीतरे पूजी होय,
पोसा में निद्रा, विरुथा प्रमाद कीधो होय तस्स मिच्छामि दुक्कइ ।
जावता अवसही आपसही नहीं किधु होय, आवता निसिही
निमिही नहीं कीधु होय, इद्र महाराजरी आज्ञा नहीं लीधी
होय, थोड़ी दूर पूज्या होय, घणी दूर परठी होय, परठन तीन
चार बीसरे २ नहीं कीधु होय तस्म मिच्छामि दुक्कइ ॥ ११ ॥

द्धारमा अतिथी संविभाग व्रत—साधु निग्रथ ने पासुएपणीक
शुद्ध, अमण पाण, खाइम, साइम, वन्ध, पडिग्गह (पात्र)
कवल, पायपुञ्जणेण (पैर इंचने का) पीइ (पाट) फलग
(वाजोट आदि) मिज्जा (पाट, स्थानक,) सथारो (तृणा
दिक) औपध, भेषज (चुर्णादि) प्रतिलाभतो थको विचरू
एवी मारी श्रद्धा प्ररूपणा तो छै फरसणा करू तेवारे सिद्ध ।

[एवा चारमा अतिथि सविभाग व्रतके विपै जे कोई अतिचार लागो होय ता आलोउ, सृजता वरतु सचित्त ऊपर मूकी होय, सचित्त करी ढांकी होय पोतेरी वस्तु पारकी कहीं होय, अह-कार भाये दान दीधु होय, थोडो दे घणो पोमायो होय, भोजन वेला टात्तीने निमन्त्रण कीधी होय तस्स मिच्छामि दुक्कड ॥१२॥

संलेखणा की पाटी ।

एवा संलेखणा के विपै जे कोई अतिचार लागो होय तो आलोउ, इहलोगा समप्पउगे (इस लोग में इच्छा करके मैं राजा होउ) परलोगा समप्प उग (परलोग में सुख की इच्छा करे कि मैं देवता होवु) जीविया समप्प उगे (जीवित की इच्छा) मरणा समप्प उगे (मरण की इच्छा करे कि मैं दुःख से छुडु) काम भोगा समप्प उगे (कामभोगनी इच्छा करे) मा मज्ज हूज्ज मरण ते (ये उपरोक्त विचार मरणान्त तक नहीं होये) श्रद्धा प्ररूपणा में फरक आयो तो तस्स मिच्छामि दुक्कड ॥

तस्स धम्मस्स की पाटी ।

तस्स धम्मस्स केवल्लिपन्नत्तस्स (केवल्लि भाषित एवा आनक धर्म ने) अम्पुट्टिउमि (सब रीत पालन करने के लिये उठा हू) आराहणाए (आराधना के लिए) विर उमि विरा हणाए (चिराधना करवा यकी मैं विरम्यो हू) तिविहेय

(तीन विधि करी) पडिक्क तो (प्रतिक्रांत थका इतना
अतिचार पाप थकी निवत्यो) वंदामि (मैं नमस्कार करता
हू) जिणे चउव्वीस (चौबीस जिनराज को) ॥ इति ॥

तस्स सव्वस्स की पाटी ।

तस्स सव्वस्स (वे सब) देवसियस्स (दिन सभी)
अइयारस्स (अतिचार) दुग्मासिय (खराब भाषा)
दुच्चिचतिय (खोटी चिन्तवना) आलोयते (आलोउ) पडिक्कमामि ।

चत्तारी मंगल का पाठ ।

चत्तारी (चार), मगल), अरिहता मगल, सिद्धा मगल,
साहु (साधु) मगलं केवलि पन्नचो धम्मो मगलं
(केवलि प्ररूप्यो धर्म ते मगल) चत्तारि लोगुत्तमा (चार
लोगा में उत्तम) अरिहतो लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा, केवलि
पन्नत्तो धम्मो लोगुत्तमा चत्तारि सरण पवज्जामि (प्रहण
करता हूँ) अरिहन्ते सरण पवज्जामि, सिद्धेमरण पवज्जामि,
साहुसरण पवज्जामि, केवलिपन्नत्त धम्म सरण पवज्जामि ।
अरिहतारो सरणो सिद्धारो सरणो, साधारो सरणो, केवलि
प्ररूपित दयाधमरो सरणो । चारसरणां दुर्गति हरणा, और
सरणो नहीं कोय । जे भव्यप्राणी आदरे तो अक्षय अमर
पद होय ॥ इति ॥

अठारे पापस्थानक का पाठ ।

अठारे पापस्थानक आलोउ, प्राणातिपात, मृयावाद, अदत्तादान, मैथुन, परिग्रह, क्रोध, मान, माया, लोभ, राग, द्वेष, कलह, अव्याख्यान (बड़ा आल देना) पैशुन्य (चुगली खाना) पर परिवाद (दूसरेका अग्रगुणबोलना) रति अरती (हर्ष शोक करना) माया मोसो (कपट सहित झुठ बोलना) मिथ्यादर्शन शल्य (खोटा श्रद्धा तथा सल राखना) ए अठारे पापस्थानक सेव्या होय सेवता प्राति मला जाणयो होय तस्स मिच्छामि दुक्कह ॥ इति ॥

॥ खमासण की पाटी ॥

इच्छामि (मैं चाहता हू) खमासणो (हे जमा श्रमण) वंदिउ (वादणो कू) जवणिज्जाए (शक्तिकरयुक्त) निसीही आए (जीवहिंसा रहित प्रयोजन वाला मेरे शरीर से) अणु जाणह (मुझको हुकम देओ) मे (मुझको) मिउग्गह (प्रमाणपुत्र चेत्रमें प्रवेश करने) निसीहि (दूसराकामछोडके) थहो (नीचे झुक के) काय (काया से) कायसफास (आपके पात्र काया से) खमाणि (स्पर्श करता हू) ञ्जोमे (माफ करना) किलामो (हे भगवत आपको ग्वेद उपजाया होय) अप्पकिलताण (थोडी ग्लानि) बहुसुमेण (बहुत समाधि भात्र से) मे (हे पूज्य) दिवसो (दिन) वइक्कतो (वीताहै) जत्तामे (तप नीयम सजम स्वाध्याय रूप यात्रा) जवणिज्जच

(इन्द्रिय और नो इन्द्रिय से खेदरहित आपका शरीर)
 (हे भगवन्) सामेमि (खमाता हू) खमासमणो, देवमि
 वडक्कम । दिन सम्बन्धी अपराध) आवासिआए (आनन्द
 क्रिया) पडिक्कमामि (मैं निवर्तता हूं) समासमणाय (स
 धुओं की) देवासियाए (दिनमें हुई) आसायणाए (आशातना
 हुई हो) तेतीसन्नयराए (तेतीस आशातना में से) जि
 चि (जो कुछ) मिच्छाए (मिथ्याभाव रूप आशातना) मर
 दुक्कडाए (मन सम्बन्धी पाप वय दुक्कडाय (वचन सम्बन्धी
 पाप) काय दुक्कडाय (शरीर सम्बन्धी पाप) कोहाए (क्रोधरूप
 अशातना माणाए (मान आशातना) मायाए (माया आशातना)
 लोहाए (लोभ आशातना) सब्बकालियाए (सब काल सम्बन्धी)
 सब्बमिच्छोवयाराए (सब मिथ्या उपचार आशातनाकार
 के) सब्बधम्माइक्कमणाए (सब धर्म करणी उल्लाघने रूप)
 आसायणाए (आशातना करने से) जो मे (जो मेरे जीने)
 अइयारो (अतिचार) कओ (किया होय) तस्स (उसका)
 खमाममणो पडिक्कमामि (मैं प्रतिक्रमता हूं) निंदामि (आत्म
 से निन्दता हू) गरिहामि (गुरु की साक्षी निन्दता हू) अप्पाण
 मेरी पापी आत्मा को) वोसिरामि (मैं छुडाता हू) इति ॥

॥ पंच पदों की वंदना

नमो अरिहताय कहता पहिले पद जघन्य २० तीर्थंकर
 जी, उत्कृष्टा १७० तीर्थंकर जी, ३४ अतिशय ३५ वाणी करने

विरानमान, १००८ लक्षण का धरणहार, १८ दोष रहित, १२ गुण करी सहित, अनता ज्ञान, अनतो दर्शन अनतो सुख, अनता मल, दिव्य धुनि भामण्डल फटिक सिंहासन, आशोक वृक्ष पुष्पवृष्टि, देवदुग्धि छत्र धरे चामर त्रिज चौगठ इन्द्रारा पूजनीक महप्रदेह क्षेत्र में जेयन्ता त्रिचरें, जघन्य २ क्रोड केवली उत्कृष्टा ६ क्रोड केवली, केवलज्ञान, केवल दर्शन करीने विराजमान, सर्वद्रव्यक्षेत्र, कालभाषना जाणनहार, ज्या महापुरुषा ने मारा वदना मालूम हुई जो तिकपुत्रे पाठ सु ।

॥ सर्वैया ॥

नम्रु श्री अरिहत, कर्मों को कियो अत,
हुना सो केवल पथ, करुणा भडारी है ।
अतीशेचौतीस धार, पैतीसनाणी उचार,
समभावे नर नार, पर उपकारी है ।
शरीर सुदर आकार, सूरज मो ऋतकार,
गुण है अनत सार, दोष परिहारी है ।
कहत है तिलोक रिख, मन, वच, काया करि,
लली लली वारवार, वन्दना हमारी है ॥

ऐसे श्री अरिहत भगवन दीनदयाल महाराज को अविनय आशातना कीधी होय, तो (देवपी, या, रायसी) संचधी हाथ जोड़ी, मान मोड़ी, काया सकोची वारवार समाता हू. मत्थपण्य वदामि । नमस्कार करता हु १००८ वार तिकपुत्रों के पाठ सु मन वचन काया करीने, आप मांगलिक हो, उत्तम हो, हे स्वामि-

नाथ आपको इण भव, परभव, भव भय सदा काल सरणो हुई
जो ॥ इति ॥

चीजे पद ममो सिद्धाण कहता सिद्ध भगवान १५ भेदे,
१४ प्रकारे सिद्ध सिद्धा ८ गुणा करी विराजमान जठे जन्म नहीं,
जरा नहीं, मरण नहीं, रोग नहीं, शोक नहीं, मोह नहीं, माया नहीं,
कर्म नहीं, काया नहीं, चाकर नहीं, ठाकुर नहीं, निरजन निरा-
कार, जोत में जोत विराजमान, अनतो सुख में भिलरया, ज्या
महापुरुगाने मारी वन्दना तिवखुत्ता के पाठ से हुईजो ।

॥ सचैया ॥

सकल कर्म टाल, वश कर लियो काल,
मुक्ति में रखा माल, आत्मा कु तारी है ।
देखत सकल भाव, हुआ है जगत राव,
सदा ही चायिक भाव, भय अविकारी है ।
अचल अटल रूप, आवे नहीं भव कूप,
अनूप सरूप उप, ऐसे रिद्धधारी है ।
कहत है तिलोक रिख, बतार्यो ए वास प्रभु,
सदा ही उगते सूर वन्दना हमारी है ॥ २ ॥

ऐसे सिद्ध महाराज आपका अविनय आशातना कीया
होय, तो (देवसी रायसी सम्बन्धी) हाथ जोड़ी मान मोड़ी
काया संकोची बारम्बार खमाता हू । मत्थण वंदामि १००८
चार तिवखुत्तारे पाठ सुं मन, वचन, काया करी ने आपको
भव भव सदा काल सरणो हुई जो ।

तीजे पद नमो आयरियाण कहना आचार्यजी महाराज,
 ३६ गुणा करी विराजमान ५ आचार पाले, ५ इंद्रिया जीते,
 ५ महाव्रत पाले, ४ कषाय टाले, ६ चाङ्ग शुद्ध शीलव्रत पाले
 ५ सुमति सुमता ३ गुप्ति गुप्ता, अनेक गुणा करी विराजमान,
 ८ सम्पदा सहित ज्यां महापुरुषोंने मारी वन्दना हुई जो
 तिकलुचारे पाठसु ।

सवैया—

गुण है छतीस पुर, धरत धर्म उर,
 मारत कर्म कुर, सुमति विचारी है ।
 शुद्ध सो आचारवन्त, सुन्दर है रूप कंत,
 भणिया समी सिद्धान्त, वाचणा सु प्यारी है ।
 अधिक भधुर वैण, कोई नहीं लोपे केष,
 सकल जीवों का भेष, किंचि अपारी है ।
 कहत है तिलोत्त रिख, हितकारी देत सिख,
 ऐसे आचारज ताकु वन्दना हमारी है ॥ ३ ॥

ऐसे आचार्यजी महाराज . . . सशयो हुई जो ।

चोथे पद नमो उवज्झायाण कहता सर्व उपाध्यायजी
 महाराज २५ गुणां करी ने विराजमान, ११ अंग १२ उपांग
 आप भणे आंराने भणाने १४ पूर्वना पाठी, करण सत्तरी,
 चरण सत्तरी ना धरणहार, धेवर डिगते प्राणी ने धर्म रे विषय
 स्थिर करणहार, गणां स्रजना पाठी वो जाणनहार, ज्या महा-
 पुरुषो ने मारी वन्दना तिकलुत्ता के पाठ सु मालूम हुई जो ।

सर्वैया

पढ़त इग्यारे अंग, कर्ना सु करें जग
 पासही को मान भग, करण हुशियारी है ।
 चन्दे पूर्वधार, जाणत आगम सार,
 भावियन के सुखकार, भद्रता निवारी है ।
 पढ़ाने भविकजन, स्थिरकर देत मन,
 तपकरी तावे तन, मसता निवारी है ।
 कहत है तिलोख रिख, ज्ञान भानू परतिख,
 ऐसे उपाध्याय ताकु वन्दना हमारी है ।

ऐसे उपाध्यायजी महाराज मिथ्यात्व रूप अधकारन
 भेटन हार, समाकित रूप ना उद्योत करण हार, धर्म थकि डिगते
 प्राणी ने स्थिर करणहार, इत्यादिक अनेक गुणा करी निराज-
 मान ऐसे उपाध्यायजी महाराज
 मत्थण्य वदामि ।

पाच मे पद नयो लोए सब्बमाइण कहता सब परकार्य
 साधन हार पोताना धर्माचार्य (यहा पर अपने अपने गुरु का
 नाम लेना) जी महाराज जघन्य २ हजार क्रौड साधु साधनी,
 उत्कृष्टा ६ हजार क्रौड साधु साधनी अर्दाई द्वीप, पनरे क्षेत्र में
 जेवन्ता विचरे २७ गुणा करी ने निराजमान, ५ महात्रतपाले,
 ५ इन्द्री जीते ४ कपाय टाले भव सच्चे, करण सच्चे, जोग सच्चे,
 मनसमाधारणिया, वय समाधारणिया, काय समाधारणिया
 नाण सपन्ने, दसण सपन्ने, चारित्त सपन्ने क्षमावत, वैराग्यवत,
 वेदनी समा आदिया साणिया, मरणंत कष्ट सहे,

५२ अनाचार टाले, ४२ दोष टाली ने आहार पानी लेवे
 ४७ दोष टाली ने भोग वे, २२ परिसाजीते, १७ भेदे शुद्ध
 सजम पाले, १२ भावना माये, १२ भेदे तप फरे, १० यति
 धर्म ना धारक, अनेक गुणां करी ने विराजमान, वस्त्रपात्र,
 आहार स्थानक निर्दोष भोगने, भगवत की आज्ञा माहि विचरे
 ज्या महापुरुषों ने मारो वदना मालूम हुई जो तिरहुता के
 पाठ सु ।

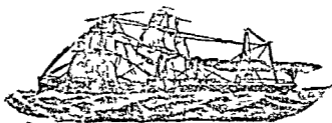
[सवैया]

आदरों सजम भार, कराखि करे अपार,
 सुमति गुप्तिधार, विरुथा निवारी है ।
 जेयणा फरे छ, काय साधन नोले चाय,
 वृक्षाई कपाय लाय, किये भडारी है ।
 ज्ञान मये आठों जाम, लेये भगवत नाम,
 धर्म को करे काम ममता को मारी है ।
 कहत है तिलोख रीख, कर्मों को टाले पिख,
 ऐसे मुनिराज ताकु, वदना हमारी है ।

(श्रीगुरुदेवने)

जैसे कपड़ा को थान, दरजी बेतत आण,
 खडग्वड करे जाण, देतसो सुधारी है ।
 फाटके ज्यु सुत्रधार, हेमक रुमे सुनार,
 माटी के को जा कुमकार, पात्र कर तयारी है ।
 धरती के कीरमाण, लोहे के लुहार जाण,
 सीलवाट सीला आण, घाट घड़े भारी है ।

केन है तिलोक रीस, सुधारे ज्युं गुरु शीष,
गुरु उपकारी, नित लीजे चलिहारी है ॥१॥
गुरु मित्र, गुरु मात, गुरु सगा, गुरु तात,
गुरु भूप, गुरु धात, गुरु हितकारी है ।
गुरु रवि, गुरु चन्द्र, गुरु पति, गुरु इंद्र,
गुरु देव दे आणद, गुरु पद भारी है ।
गुरु दिठत ज्ञान ध्यान, गुरु देत दान मान,
गुरु देत मोच थान सदा उपकारी है ।
केत है तिलोक रीस, मली मली दीनी शिख,
पल पल गुरुजी फों, चंदणा हमारी है ॥२॥



अनंत चौबीसी स्तवन

अनंत चौबीसी जे नमू, मिद्व अनता क्रोड़ ।
 केवल ज्ञानी गणधरा, वदू धे कर जोड़ ॥ १ ॥
 दो क्रोड़ केवल धरा, विहरमान जिन वीश ।
 सहस्र युगल क्रोड़ी नमू साधु नमू निश दीश ॥ २ ॥
 धन साधु धन साध्वी, धन श्री जैन धर्म ।
 हण समरया सकट कटे, टूटे आठो कर्म ॥ ३ ॥
 अरिहत सिद्ध सिमरू सदा, आचार्य उवभाय ।
 साधु सकल के चरण को, वदू शीश नमाय ॥ ४ ॥
 लोभी गुरु तारे नहीं तिरे सो तारणहार ।
 जो तू तिरवो चाहिये, निर्लोभी गुरु धार । ५ ॥
 सत्य मत छोड़ो हे नरा, लक्ष्मी चौगुनी होय ।
 दुख सुख रेखा कर्म की, टाले टले न कोय ॥ ६ ॥
 विप्र हरण मगल करण, धन श्री जैन धर्म ।
 हण समरया सकट कटे, टूटे आठो कर्म ॥ ७ ॥

आचार्य उवज्भाए का पाठ ।

आचार्य (आचार्य) उवज्भाए (उपाध्याय) सोसे
 (शिष्य) साहम्मिए (साधर्मिक) कुलगणे (कुलसमुदाय)
 अ (सबके ऊपर) जे (जो) मे (मारेजीये) केइ (कोई)
 कसाया (क्रोधादिक कपाय कीधा होय) सव्ये (सब) तिवहेय

(त्रिविध करी) खामेमि (खमाता हूं) सव्यस्म समणमंधस
 भगवथो (सत्र श्रमण संघ रूप भगवंत ना जो अपराध किया
 होय) अंजलि करिय सीते (मस्तकपर दो हाथ जोड़ कर)
 सव्य खमाउत्ता (उन सत्र अपराध प्रत्ये खमावी ने) खमामि
 सव्यस अहयपि (मैं उन सत्र अपराधोंको खमाता हू) सव्यस
 जीव रामिस्म (एकेंद्रियादिक सत्र जीवनी राशि) भाग्यो
 (भारयी) धम्म (धर्म) निहिय (निधित करयु) नियचित्तो
 (निज चित्त) सव्यं खमावइता खमामि सव्यस्स अहमपि ॥ इति ॥

श्रावकों से क्षमत क्षमावणा करने का पाठ ।

अढाई द्वीप पन्नरह क्षेत्रमाहे श्रावकजी * जीवका जाण,
 अजीव का जाण, पुण्य का जाण, पापका जाण, आश्रवका
 जाण, सत्तरका जाण, निर्भरता का जाण, उव का जाण, मोक्ष
 का जाण, दान का देने वाला, भावनाका भावने वाला, बड़ा
 श्रावकजी ने ॐ हाथ जोड़, मानमोड, वार वार खमावू छू,
 छोटा ने समुच्चय धारवार खमावू छु ॥ इति ॥

चौरासी लाख जीवयोनि का पाठ ।

सात लाख पृथ्वीकाय, सात लाख अपकाय, सात लाख तेउ-
 काय, सात लाख वायुकाय, दशलख प्रत्येक वनस्पतिकाय चौदह
 लाख साधारण वनस्पतिकाय, दो लाख वेन्द्रिय दो लाख तेइन्द्रिय
 दो लाख चउरिन्द्रिय, चार लाख नारकीय, चारलाख देवता,
 चार लाख तिर्यच पंचेंद्रिय चौदह लाख मनुष्य की जाति

* श्राविकाओं को " श्रावक " शब्दके स्थान में " श्राविका " कहना चाहिए ।

चार गति चौबीस दडक, चौरासीनाख जीवयोनि में से कोई जीव ने जाणता अजाणता मन वचन काया करी ने हएष होय, हणायो होय हणता प्रत्ये भलो जाणयो होय, तो १८२४१२० प्रकारे * तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ इति ॥

सर्व जीवराशि क्षमाने का पाठ ।

खामेमि (खमाता हु) सब्बे जीवा (सब जीवों को) सब्बे जीवा खमतु में (सब जीव मेरे अपराध को माफ करो) मित्ती मे सब्ब भूएषु (मित्रता है मेरे सब जीवों मे) वेरमभन केणइ (वैर भाव मेरे नहीं किसी से) एव मह (इस तरह में) आलोइय (प्रकाश किया) निंदिय (निंदा करी) गरहिय (गुरु सन्मुख गर्हणा करी) दुगीळिय (दुगन्धा करी) सम्म (अच्छा-तरे) तिपिहेण पडिक्कतो (निविध पतिक्रमता हुआ) वदामि (नमस्कार करता हु) जिणे चउवीस (जिन चौबीसोंको ॥ इति ॥

समुच्चय पञ्चखाण का पाठ ।

गठि महिय, मुट्ठि माइयं, नरकारमी, पोरमी, साढा पोरमी आप आपनी धारणा प्रमाणे तिविहपि, चउविहपि, आहार, अमण, पाण, खाइम, साइम, अन्नत्थणा, भोगेण, महमागारेण, महत्तरागारेण सब्बसमाहि, वत्तियागारेण, वोमिरे+वोसिरे । इति ॥

प्रतिक्रमण सूत्र समाप्त

ॐ प्रातः काल को सदा ही ' राइमि ' और मायकाल को देवमि तथा पण्यो चतुर्मासी सबत्सरी, को देवसि पण्यो आदि तस्स मिच्छामि दुक्कड के पहले ही उसके साथ में कहना ।

† आप स्वयमेव करे जब वोसिरामि २ बोताना ।

प्रतिक्रमण करने की विधि

निर्जीव स्थान में शुद्धतापूर्वक एक आमन पर बैठकर तीन वार तिक्रखुत्ते के पाठ से श्री मंदिर स्वामीजी को या वर्तमान में अपने गुरु महाराज को खड़े हो वदना करके चौबीसत्थव की आज्ञा लेकर चौबीसत्थ करे ।

फिर तिक्रखुत्ते के पाठ से तीन वार वदना करके (राइमि या दैवसि, देवसिपक्खी, देवमि चतुर्मासी, देवमि संवत्तरी प्रतिक्रमण करने की आज्ञा है, इसप्रकार कह प्रथम 'इन्द्रामिणं मते, का पाठ कह नमोकार मन्त्र का एरुवार उच्चारण करे । तत्पश्चात् तिक्रखुत्ते के पाठ से वदना कर 'प्रथम आवश्यक करने की आज्ञा है' ऐसा कह प्रथम आवश्यक करे ।

मन्त्र कहकर-ध्यान पारे । तत्पश्चात् प्रथम सामायिक आवश्यक समत्त" इस मूर्ति कहकर तिक्रुते के पाठ से वदना कर, "दूसरा आवश्यक की आज्ञा है" ऐसे उच्चारण करने के पश्चात् द्वितीय आवश्यक करे ।

[द्वितीय आवश्यक]

द्वितीय आवश्यक में 'लोगम्स' के पाठ का प्रगट पाठ करे । फिर सामायिक चौबीसथर दो आवश्यक समत्त, ऐसे कहकर तिक्रुते के पाठ से वदना कर 'तीसरा आवश्यक की आज्ञा है इसप्रकार भाषण करने के पश्चात् तृतीय आवश्यक करे ।

[तृतीय आवश्यक]

तृतीय आवश्यक में दोनों घुटने ऊंचे कर हाथ जोड़ 'इच्छामि खमासमणे' के पाठका दोवार पाठ करे । फिर 'सामायिक, चौबीसथर, वदना, तीन आवश्यक समत्त, ऐसे कह 'तिक्रुते' के पाठ से वदना कर" चौथे आवश्यक की आज्ञा है, इस मूर्ति उच्चारण करने के पश्चात् चतुर्थ आवश्यक करे ।

[चतुर्थ आवश्यक]

चतुर्थ आवश्यक में वोही १७ पाठ, जिनका प्रथम आवश्यक के कायोत्सर्ग में चिंतवन किया था, प्रगट उच्चारण करे । फिर तिक्रुते के पाठ से वदना कर 'आवक सुख की आज्ञा है' ऐसा कहकर 'तस्स सव्वस्स' का पाठ उच्चारण करे । तत्पश्चात् जीवणा घुटना ऊंचाकर हाथ जोड़ "नमोकार मत्र" को एक बार उच्चारण कर निम्नोक्त ३१ पाठों का उच्चारण करे—

(१) करोमि भते (२) चत्वारि मगलं (३) इच्छामि ठामि
 (४) हरियावहियाय, (५) आगमेतिविहे, (६) दर्शन
 सम्यक्त्वं रत्न (७ - ३०) चारह अणुव्रत और उनके चारह स्थूल
 (३१) सलेखना ।

फिर एम समकितपूर्वक चारहव्रत सलेखना सहित ।
 एहने विषे जे कोई अतिक्रम, व्यक्तिक्रम, अतिचार, अनाचार,
 जाणता, अजाणता, मन, वचन, काया ये करी सेव्यो होय,
 सेवायो होय, सेवता प्रत्ये अणुमोत्रा होय, तो अनंता सिद्ध
 केवली नी साखे (राइसि, देवसि, देवसि पक्खी, देवसी चतु-
 र्मासी, देवसि संवत्सरी सम्बन्धी) तस्स मिच्छामि दुक्कडं ।

फिर अठारह स्थानक और 'इच्छामि ठामि' के पाठ बोले ।
 फिर खड़ा होकर 'तस्स धम्मस्स' का पाठ उच्चारण करे ।
 तत्पश्चात् दानों घुटने ऊंचे कर हाथ जोड़ 'इच्छामि सत्तमासमणो'
 का पाठ विधियुक्त दो बार पठन करे । फिर दानों घुटने ऊंचे
 कर मस्तक को पृथ्वी से लगा दोनों हाथ जोड़ पांच पदों की
 वदना करे ।

तत्पश्चात् "अरिहन्तजी, सिद्धजी, आचार्याजी, उपाध्यायजी
 साधुजी, जे भीमहावीर स्वामीजी की आज्ञा में विहरे छे, तेने सर्वने
 म्हारी वदना नमस्कार हुई जो" ऐसे कह सीधे बन बैठ "अनन्त
 चौबीसी" बोले ।

फिर 'आयरिय उवज्झाए' का पाठ कह, 'आवकों' (या
 भाविकाओं) से चमत चमावणा करने का पाठ पढ़ें, बाद में,

चौरामी लाख जीवायोनि, का पाठ कह कर 'सर्वजीवराशि' का पाठ उच्चारण करे ।

फिर सामायिक, चौबीसस्थव, वंदना, प्रतिक्रमण, ए चार आवश्यक सम्पत्तं' ऐसे कह तिकखुते के पाठ से बदना कर, 'पाचवां आवश्यक की आज्ञा है, इसप्रकार भाषणकरके पचम् आवश्यक करे ।

(पंचम आवश्यक)

पंचम आवश्यक में (देवसि या राइसि, देवसि, पक्खी देवसि, चतुर्मासी, देवसि संवत्सरी) ज्ञानदर्शन चरित्ता चरित्त तंय अतिचार पायच्छित्त विशोधनार्थं करेमि काउत्सगं ऐसा कहे ।

फिर नमोकार मंत्र करेमिभते का पाठ, इच्छामि ठामि का पाठ और तस्स उत्तरी का पाठ पूर्ण कहकर कायोत्सर्ग करे ।

कायोत्सर्ग (ध्यान में) नित्य ॐ लोगस्स के पाठ का चार वार चिंतन करे । फिर नमोकार मंत्र बोलकर ग्यानपारे । बादमें 'लोगस्स' का पाठ कहकर इच्छामि खमासमणों का पाठ दोनों घुटने ऊंचे कर हाथजोड़ विधिवत् दो वार उच्चारण करे ।

* पूज्यधीरत्तनचन्द्रजी महाराज की संप्रदाय में सदाही चार लोगस्सका ध्यान करने की प्रणाली है ।

कई संप्रदायों में पत्नी को ११ चातुर्मासीको ९० और सब स्तरी को ४० 'लोगस्स' का ध्यान करने की आज्ञाय प्रचलित है विशेष जैसी जिसकी आज्ञाय हो उसी प्रकार करें ।

घादमें 'सामायिक' चौबीसत्यव, वंदना प्रतिक्रमण, कायोत्सर्ग, पांच आवश्यक समत्तं,, ऐसा कहे तिकखुते के पाठ से वंदना कर, छठा (पच्चक्खाण) आवश्यक की आज्ञा है, इसप्रकार कहे छठा आवश्यक इस प्रकार करे ।

(छठा आवश्यक)

छठा आवश्यक में सड़ा हो साधुजी (साध्वीजी) महा राज की उपस्थिति में उन से शक्ति अनुसार करे, पच्चक्खाण करे । तथा उनकी अनुपस्थिति में समुच्चय पच्चक्खाण के पाठ से पच्चक्खाण करे ।

किर सामायिक, चौबीसत्यव, वंदना, प्रतिक्रमण, कायोत्सर्ग, पच्चक्खाण, छः आवश्यक समत्तं। ऐसे कह ए छः आवश्यक माहीं जाणता, अजाणता, जे कोई अतिचार दोष लाग्यो होय तथा पाठ उच्चारतां कांनों, मात्रा, अनुस्वार, पद अक्षर, अधिकां, हीण्यो, आगो, पीछो, कह्यो होय तो तस्समिच्छामि दुक्कड ।

मिथ्यात्वनो पडिक्कमणो, अत्रत नो पडिक्कमणो, प्रमादनो पडिक्कमणो अशुभयोग नो पडिक्कमणो कपायनो पडिक्कमणो ए पांच पडिक्कमणा माहिलो कोई पडिक्कमणो नहीं कीधो होय तस्स मिच्छामि दुक्कड ॥

शया काल को पडिक्कमणो वर्तमान काल को सवर तथा सामायिक आवता कालका पच्चक्खाण, ते माहीं जे दोष लाग्यो होय तस्स मिच्छामि दुक्कड ।

इस प्रकार दोनों हाथ जोड़ फिर नीचे बैठ हाँवा घुटना ऊँचा रख, दो नमोत्थुण, देवे । तत्पश्चात् श्री मंदिरस्वामीजी, वर्माचार्यजी तथा उपास्थित साधू (साध्वी) जी सबको विधि युक्त तिक्रुते पाठ से वदना करे ।

फिर विद्यमान श्रावकों (श्राविकाओं) से चमतज्ञमावणा करे । बाद में चौबीसी स्तवन उच्चारण करे ।

प्रतिक्रमण विधि सम्पूर्णम्

यादमें, 'सामायिक' चौबीसत्थव, वंदना प्रतिक्रमण, कायोत्सर्ग, पाच आवश्यक समत्तं,, ऐसा कहे तिवखुते के पाठ से वंदना कर, छठा (पच्चकखाण) आवश्यक की आज्ञा है इसप्रकार कह छठा आवश्यक इस प्रकार करे ।

(छठा आवश्यक)

छठा आवश्यक में खड़ा हो साधुजी (साध्वीजी) महा राज की उपस्थिति में उन से शक्ति अनुसार करे, पच्चकखाण करे । तथा उनकी अनुपस्थिति में समुच्चय पच्चकखाण के पाठ से पच्चकखाण करे ।

छिर सामायिक, चौबीसत्थव, वंदना, प्रतिक्रमण, कायोत्सर्ग, पच्चकखाण. छः आवश्यक समत्तं । ऐसे कह ए छः आवश्यक मारहीं जाणता, अजाणता, जे कोई अतिचार दोष लाग्यो होय तथा पाठ उच्चारतां कानों, मात्रा, अनुस्वार, पद अक्षर, अधिक्ता, हीण्यो, आमो, पीछो, कहा होय तो तस्समिच्छामि दुक्कड ।

मिथ्यात्वमो पडिक्कमणो, अत्रत नो पडिक्कमणो, ममादनो पडिक्कमणो अशुभयोग नो पडिक्कमणो कषायनो पडिक्कमणो ए पांच पडिक्कमणा माहिलो कोई पडिक्कमणो नहीं कीधो होय तस्स मिच्छामि दुक्कड ॥

गया काल को पडिक्कमणो वर्तमान काल को सवर तथा सामायिक आवता कालका पच्चकखाण, जे मारहीं जे दोष लाग्यो होय तस्स मिच्छामि दुक्कड ।

इसप्रकार दोनों हाथ जोड़ फिर नीचे बैठ हांवा घुटना ऊचा रख, दो नमोत्थुण, देवे । तत्पश्चात् श्री मदिरस्वामीजी, धर्माचार्यजी तथा उपास्थित साधू (साध्वी) जी सबको विधि युक्त तिक्रुते पाठ से वदना करे ।

फिर विद्यमान श्रावकों (श्राविकाओं) से वमतत्तमावणा करे । बाद में चौविासी स्तवन उच्चारण करे ।

प्रतिक्रमण विधि सम्पूर्णम्

चौवीसी स्तवन

श्री श्री ऋषभ अजित संभव अभिनन्दन, सुमति पद्म
 सुपार्श्व मुनिरजन, चन्द्रप्रभुजिनदेवो । सुविधिनाथ शीतलगुण
 गाऊं, श्री श्रेयांस वासु पूज्यजी ने ध्याऊ श्री विमल सुनिर्मल
 देवो । अनन्त धर्म श्री शांतिजिनेश्वर, कुथुनाथ अति ही अल
 वेसर, बद्ध श्री अर्हनाथो । मङ्गिनाथ मुनिसुव्रत स्वामी, श्रीनमि-
 नेमपार्श्व अंतरायामी, श्री मुक्ति तर्णा दातारो । चौवीसमां भी
 वीर जिनेश्वर, पर उपकारी साहिब श्री परमेश्वर, पहुचा है
 निर्वाणों । इन चौवीसारा नित्यगुण गावे, दुःखदरिद्र तेना
 दूर पलावे, बर्त्से क्रोड कल्याणों । पुण्ययोगे मानव भव लाधो,
 श्री चौवीस जिनवरजी आराधो, तुम लाभो लेनोजी तुम लाभो ।
 ए चौवीस मजो सिरनामी, श्री मोटा मधु साहिब अंतरायामी,
 मुक्ति तर्णा दातारो ॥ इति ॥

२४ तीर्थंकरों के नाम ।

- | | |
|--|--|
| (१) श्री ऋषभदेवजी (अपरनाम) श्रीआदिनाथजी. | |
| (२) श्री अजितनाथजी | (३) श्री संभवनाथजी |
| (४) श्री अभिनन्दनजी | (५) श्री सुमतिनाथजी |
| (६) श्री पद्मप्रभुजी | (७) श्री सुपार्श्वनाथजी |
| (८) श्री चन्द्रप्रभुजी | (९) श्री सुविधिनाथजी (अपर
नाम) श्री पुष्पदन्तजी |

- (१०) श्री शीतलनाथजी (११) श्री श्रेयासनाथजी
 (१२) श्री वासुपूज्यजी (१३) श्री विमलनाथजी
 (१४) श्री अनतनाथजी (१५) श्री धर्मनाथजी
 (१६) श्री शातिनाथजी (१७) श्री कुधुनाथजी
 (१८) श्री अर्हनाथजी (१९) श्री मल्लिनाथजी
 (२०) श्री मुनिसुब्रतजी (२१) श्री नेमिनाथजी
 (२२) श्री अरिष्टनेमिजी (२३) श्री पार्श्वनाथजी
 (२४) श्री महावीर स्वामी (श्रीवर्द्धमानजी)

२० विहरमान के नाम ।

- (१) श्री मदिरस्वामी (२) श्री जुगमदिर स्वामी
 (३) श्री बाहूजी स्वामी (४) श्री सुबाहूजी स्वामी
 (५) श्री लुजातस्वामी (६) श्री स्वयम्भुजी स्वामी
 (७) श्री ऋष्यमानन्द स्वामी (८) श्री अनन्तवीर स्वामी
 (९) श्री सूरप्रभु स्वामी (१०) श्री वज्रधर स्वामी
 (११) श्री विशालधर स्वामी (१२) श्री चद्रानन स्वामी
 (१३) श्री चन्द्रबाहू स्वामी (१४) श्री भुजग स्वामी
 (१५) श्री ईश्वरस्वामी (१६) श्री नेमप्रभु स्वामी
 (१७) श्री वीरसेन स्वामी (१८) श्री महाभद्र स्वामी
 (१९) श्री देवयश स्वामी (२०) श्री अजितवीर स्वामी

११ गणधरों के नाम ।

- (१) श्री इन्द्रभूतिजी (२) श्री अग्निभूतिजी
 (३) श्री वायुभूतिजी (४) श्री विगतभूतिजी

- (५) श्री सुधर्मा स्वामी (६) श्री मर्डी पुत्रजी
(७) श्री मोरीपुत्रजी (८) श्री अकपितजी
(९) श्री अचलजी (१०) श्री मेतारजी
(११) श्री प्रभासजी ।

१६ सती के नाम ।

- (१) श्री ब्राह्मीजी (२) श्री सुन्दरजी
(३) श्री कौशल्याजी (४) श्री सीताजी
(५) श्री राजमतीजी (६) श्री कुताजी
(७) श्री द्रोपदीजी (८) श्री चंदणाजी
(९) श्री मृगावतीजी (१०) श्री चेळनाजी
(११) श्री प्रभावतीजी (१२) श्री सुभद्राजी
(१३) श्री दमयतीजी (१४) श्री सुलसाजी
(१५) श्री शिवाजी (१६) श्री पद्मावतीजी

२४ तीर्थकर, २० विहरमान, ११ गणधर, १६ सती को
त्रिकाल घटना नमस्कार हो जो, तिरुखुतो जाव मत्थयण वदामि ॥

चौदह नियम ।

गाथा-सचित्त दन्वै विर्गह, वार्णह तपोल वर्त्य कुर्मुमेसु ।
वाहर्ण सयण विलेवण, धर्म दिसि १२ ३१ १४

॥ अर्थ ॥

१ सचित्तः—(जिसमें जीव सत्ता

नमक

- (२) द्रव्यः—जितनी चीज भूह में जावे उतने द्रव्य—जल, मजन, दांतन, रोटी, दाल, चावल, कढ़ी, साग, मिठाई, पूरी, घी, पापड, पान, सुपारी, चूरन, मसाला आदि ।
- (३) विगयः—१० है—जिनमें से मधु, माम, माखन, और, मदिरा ये ४ महाविगय अभक्ष होने से, श्रावक को सदा के लिये अवश्य त्याग करने चाहिए और श्रावक के खाने योग्य हैं, घी, तैल, दूध, दही, गुड़, खाड और पकवान पूरी आदि कढ़ाई में तले जाय वह ।
- (४) उपानहः—जूता, बूना, स्लीपर, मोजा आदि (जो पाव में पहने जाय)
- (५) तंबोलः—पान, सुपारी, इज्ञायची, लोंग, पान, का मसाला आदि ।
- (६) वत्थः—पान, पगड़ी, टोपी, साफा, अगरखा, चोगा, कुरता धोती, पायजामा, दुपट्टा, चदर, अगोछा, रूमाल, आदि मरदाना और जनाना कपड़ा (जो ओढ़ने पहनने में आवे)
- (७) कुसुमेसुः—फूल फूल की चीजे जैसे सेहरा, हार, गजरा, अत्तर (जो घूबने में आने) आदि ।
- (८) वाहनंः—(मवारी) गाड़ी, फिटन, हाथी, घोड़ा, रथ, बालखी, डोली, मोटर, साइकल, रेल, ट्राम्प, नाव, जहाज, स्टीमर बैलून आदि यानि तेरता फिरता चलता और उड़ता ।

- (६) शयनः—कुरसी, पलंग, गादी, तकिया, बिछोना, तखत मेज, सुप्ताशन आदि (सोनें या बैठने की चीजें ।
- (१०) विलेपनः—तेल, केशर, चन्दन, तिलक, सुरमा, काजल उजटन, बालघनाना, कधा आदि (जो चीज शरीर लगाई जावे)
- (११) वंभ (ब्रह्मचर्य)—स्त्री पुरुष को सुई डोरे के न्याय तथा बाल विनोद की सख्या कर लेना चाहिये । श्रावण परस्त्री त्याग और स्वस्त्री से ही संतोष रखे, उसका भ्रमण करे, इसीप्रकार स्त्रियों को भी समझ लेना चाहिये
- (१२) दिसि (१० दिशा) :—इतने कोस लम्बा चौद उंचा, नीचा, जाना, आना, चिट्ठी, तार इतने कोस भेजना माल और आदमी, इतने कोस भेजना तथा मगाना ।
- (१३) न्हाण (स्नान) :—शरीर से बड़ा स्नान इतना बार करना (छोटा स्नान) हाथ पैर इतनी बार धोना
- (१४) भतेसुः—अशन पान खादिम स्वादिम ये चारों आहार में से खाने पीने में जितनी चीजे आवे ।

(चवदे नियम समाप्तम्)



श्रीपूज्य पञ्चक समन्त्र प्रातस्मरणीय प्राकृत स्तोत्रम् ॥
 सिरोमुखि सु पुंगवी, गुण रयण सज्जुतो रयणचदो मुणी ॥
 जिष्ण सासण उज्जोयर, गच्छनाहो अन्नाय सूवन्न ॥ १ ॥
 ओं हौं तेलोकमस, कुरु कुरु स्वाहा मत सिद्धि होउ ॥ पसत्थ
 मुखि धम्म धरो, तुज्झ निम्मल प्पहावत्तो सया ॥ २ ॥ गुण
 सायरो गभीरो हमीर इय सुनाम धेघराइयो । नियोगच्छनाहु
 सयल, कल्लाण रासिय देउ मवीण ॥ ३ ॥ मुखिओ ओं ह्रीं
 हौं हूं अस्सि, आउसासाहा भंतो अय । मज्झ मणम्मि चिन्तियं
 अज्जे ज्जा गुण गरिम गच्छायरियो ॥ ४ ॥ पचायार पवीणो,
 पचासव पाव मल्ल उद्धुओ । मगल कजोडिमल मुणी, कप्प तरु-
 मिय पुरेउ इच्छिय य ॥ ५ ॥ ओं ह्रीं हूं नमो अरिहताण, इयजप्पे
 ऊण जासिद्धी । साएव सुहपुरस्सर, तुज्झ ज्झाणाओ मज्झहा
 ज्जा ॥ ६ ॥ नाण दसण मज्जुतो, तवो गुणुत्तर विणय चदोमुणी ।
 तीय पडिक्ख गुणन्नू, विजिय विसमसर हिवत्त राणपसरो
 ॥ ७ ॥ मरणवधण विमुक्कट्ट, चइयोससार विसम विसयसुहो । ओं-
 हौं ह्रीं हूं स्वाहा, सिद्धो सिग्ध ममाण होउ मतो ॥ ८ ॥
 मणुअ भिगवद्रेहिं । पूइ अ चलण नलियो गुण समुदो ॥
 चिन्तामणि रयण भूअ, सोभाचदो मुखि समिभणणाहो ॥ ९ ॥
 ओं नमो सिद्धाण, भतो आपेउ सुइयर सिद्धिउ ॥ तुहनामप्प
 हावत्तो, सयल सत्तियर य भवि जीराण ॥ १० ॥ इय मुखिगण
 गणिमाला, मगल कुण्णेउ जपमणिण ॥ धम्मवर सजमाग
 देउममाण मिवमदिर पुज्जा ॥ ११ ॥

नकलकर्त्ता

श्रीदु.प्रभाचन
शर्मा

इति पूज्य पञ्चक समन्त्रस्तोत्र

प्राकृत भाषया कृत

समाप्तम्

॥ श्री शांतिनाथजी को स्तवन ॥

साता चरते जी । श्री शांति नाम से मुझ मन हरसेजी ॥ साता ॥ १ ॥
शांति नाम है कल्प तरु सम, मन वल्लत फल पावे जी ।
रोग शोक दालीदर चींता, सब मिट जावे जी ॥ साता० ॥ १ ॥
मेघ पाणी से जडु वरत्त का, सब फल तो गल जावे जी ।
वैसे आपका नाम समरण से, दुःख टल जावे जी ॥ साता० ॥ १ ॥
मन के लिये जैसे मेरुयादीक दूर कभी नहीं भासे जी ।
आप नाम से रीधी सपदा, आवे पासे जी ॥ साता० ॥ ३ ॥
सागर चीर समुन्दर मीठो, रसायन अमृत मीठो जी ।
इन्से अर्धीको मीठो शांतिजिन, नाम जो दीठो-जी ॥ साता० ॥ ५ ॥
आप नाम दीवाली दसरो, सुख सपत के दाता जी ।
आप नाम धन तेरस मारे, गरम साता जी ॥ साता० ॥ ५ ॥
शांति नाम से म्हारे मनमें, अति आनद जो छावेजी ।
लक्ष्मीदेवी मारा घर में, दौंडी आवे जी ॥ साता० ॥ ६ ॥
आप नाम चींतामणी पावे, चींता सब भगजावे जी ।
कामधेनु म्हारा घरमें दुजे, सब सुख आवे जी ॥ साता० ॥ ७ ॥
सबत वगणी से साल छींइतर चींचवड गामज आया जी ।
कार्तिक मास धन तेरस के दिन, आनद पाया जी ॥ साता० ॥ ८ ॥
मोतीलाल मुनी मोहन मुरत, पूज्य श्री सुखकारे जी ।
आपको चदन करता, चारमवारै जी ॥ साता० ॥ ९ ॥ इति ॥



॥ चन्द्राप्रभुजी को स्तवन ॥

चंदपुरी नगरी भलीरे महासेण राय उदार,
 लिखमा राणी दीपति ज्यारे कूख लियो अत्रतार
 चंदा प्रभु मो मन भावेर दूजो देव दायन आयेरे ॥ चन्द ॥ १ ॥
 ससारना सुख भोगरीरे जाणयो ससार असार
 मने बेरागे आणने प्रभु लीधो सजम भार ॥ चन्द ॥ २ ॥
 चन्द आनन्द सदा करेरे पातक जावे दूर,
 चन्द भजे ससार तरे तो जाये कर्म अकूर ॥ चन्द ॥ ३ ॥
 सुर नर असुर विद्याधरु रे इन्द्र करे ज्यारी सेव,
 मोटाराणा राजवी ज्यानू नमे असख्याता देव ॥ चन्द ॥ ४ ॥
 और देव घणा देखियारे, जठै घणां जीवारी घात
 कहो जीकां करो कुणजहे ज्यारे लागी चिन्तामणी हाथ ॥ चन्द-५ ॥
 चन्द सरीखो कोनहीरे मैं जोयो सर्व ससार,
 और डबोवे ससार मेरे, मोने चन्द उतारे पार ॥ चन्द ॥ ६ ॥
 बाणी अमृत सारखी जाणे खीर समद को नीर
 बाणी सुन हीया मैं घरे तो उतरे भजजठ तीर ॥ चन्द ॥ ७ ॥
 चन्द प्रभु मरणे आवियोरे, हाथ जोड करू अरदास,
 कृपा करि शिव दीजिये, स्तनचन्द तुमारो दास ॥ चन्द ॥ ८ ॥
 पूज गुमानचन्दजी गुरु भेठिया, घणो पाम्यो हर्ष हुलास,
 समत अठारे पचासमें, कियो, साहापुर सहर चोमास ॥ चन्द ॥
 ६ ॥ इति ।

॥ श्री शांतिनाथजी को स्तवन ॥

साता चरते जी । श्री शांति नाम से मुझ मन हरसेजी ॥ साता ॥ १ ॥
 शांति नाम है कल्प तरु सम, मन वंछत फल पावे जी ।
 रोग शोक दालीदर चींता, सब मिट जावे जी ॥ साता ० ॥ १ ॥
 मेघ पाणी से जधु वरच का, सब फल तो गल जावे जी ।
 वैसे आपका नाम समरण से, दुःख टल जावे जी ॥ साता ० ॥ १ ॥
 मन के लिये जैसे मेरुयादीक दूर कभी नहीं भासे जी ।
 आप नाम से रीधी सपदा, आवे पासे जी ॥ साता ० ३ ॥
 सागर चीर सगुन्दर मीठो, रसायन अमृत मीठो जी ।
 इनसे अधीको मीठों शांतिजिन, नाम जो दीठो जी ॥ साता ० ५ ॥
 आप नाम दीनाली दसरो, सुख सपत के दाता जी ।
 आप नाम धन तेरस मारे, गरमै साता जी ॥ साता ० ५ ॥
 शांति नाम से म्हारे मनमें, अति आनद जो छावेजी ।
 लक्ष्मीदेवी मारा घर में, दौड़ी आवे जी ॥ साता ० ६ ॥
 आप नाम चींतामणी पावे, चींता सब भगजावे जी ।
 कामधेनु म्हारा घरमें दुजे, सब सुख आवे जी ॥ साता ० ७ ॥
 सबत उगणी से साल छींहर चींचवड गामज आया जी ।
 कार्तिक मास धन तेरस के दिन, आनद पाया जी ॥ साता ० ८ ॥
 मोतीलाल मुनी मोहन मुरत, पूज्य थी सुखकारे जी ।
 सीस आपको वदन करता, वारमवारे जी ॥ साता ० ९ ॥ इति ॥



॥ चन्दाप्रभुजी को रतचन ॥

चदपुरी नगरी भलीरे महामेख राय उदार;
लिखमा राणी दीपति ज्यारे कृष लियो अवतार
चदा प्रभू मो मन भावेर दूजो देव दायन आयेरे ॥ चन्द ॥ १ ॥

ससारना सुख भोगीरे जाण्यो ससार असार
मने वेरागे आणने प्रभु लीधो सजम मार ॥ चन्द ॥ २ ॥

चन्द आनन्द सदा करेरे पातक जावे दूर,
चन्द भजे ससार तरे तो जावे कर्म अकूर ॥ चन्द ॥ ३ ॥

सुर नर असुर विद्याधरु रे इन्द्र करे ज्यारी सेव,
मोटाराणा राजवी ज्यानू नमे असख्याता देव ॥ चन्द ॥ ४ ॥

और देव घणा देखियारे, जठै घणां जीवांरी घात
कहो जीकां करो कृणबहे ज्यारे लागी चिन्तामणी हाथ। चन्द-५

चन्द मरीचो कोनहीरे में जोयो सर्व ससार,
ओर डबोवे ससार भेरे, मोने चन्द उतारे पार ॥ चन्द ॥ ६ ॥

चाणी अमृत सारखी जाणे खीर समद को नीर
वाणी सुन हीया में घरे तो उतरे मन्त्रजळ तीर ॥ चन्द ॥ ७ ॥

चन्द प्रभु सरणे आप्रियोरे, हाथ जोड करु अरदास,
कृपा करि शिव दीजिये, रतनचन्द तुमारो दास ॥ चन्द ॥ ८ ॥

पूज गुमानचन्दजी गुरु भेठिया, घणो पाम्यो हर्ष हुलास,
समत अठोर पचासमें, कियो, साहापुर सहर चोमास ॥ चन्द ॥

६ ॥ इति ।



॥ श्री शांतिनाथजी को स्तवन ॥

साता चरते जी । श्री शांति नाम से मुझ मन हरसेजी ॥ साता ॥ देर
शांति नाम है कल्प तरु सम, मन बछत फल पावे जी ।
रोग शोक दालीदर चींता, सब मिट जावे जी ॥ साता० ॥ १ ॥
मेघ पाणी से जबु वरत्त का, सत्र फल तो गल जावे जी ।
वैसे आपका नाम समरण से, दुःख टल जावे जी ॥ साता० ॥ १ ॥
मन के लिये जैसे मेरुयादीक दूर कभी नहीं भासे जी ।
आप नाम से रीधी सपदा, आवे पासे जी ॥ साता० ३ ॥
सागर क्षीर सगुन्दर मीठो, रसायन अमृत पीठो जी ।
इनसे अर्घीका मीठो शांतिजिन, नाम जो दीठो जी ॥ साता० ५ ॥
आप नाम दीवाली दसरो, सुख सपत के दाता जी ।
आप नाम धन तेरस मारे, गरमें साता जी ॥ साता० ५ ॥
शांति नाम से म्हारे मनमें, अति आनद जो छावेजी ।
लक्ष्मीदेवी मारा घर में, दौड़ी आवे जी ॥ साता० ६ ॥
आप नाम चींतामणी पावे, चींता सब भगजावे जी ।
कामधेनु म्हारा घरमें दुजे, सत्र सुख आवे जी ॥ साता० ७ ॥
सत्र उगणी से साल छीहतर चींचवड गामज आया जी ।
कार्तिक मास धन तेरस के दिन, आनद पाया जी ॥ साता० ८ ॥
मोतीलाल मुनी मोहन मुरत, पूज्य श्री सुखकारे जी ।
सीस आपको बदन करता, बारमवारे जी ॥ साता० ९ ॥ इति ॥



॥ चन्द्रप्रभुजी को स्तवन ॥

चदपुरी नगरी भलीरे महासेण राय उदार,
लिखमा राणी दीपति ज्यारे कूख लियो अरतार
चदा प्रभु मो मन भावेर दूजो देन दायन आये ॥ चन्द्र ॥ १ ॥
सकारना सुख भोगीरे जाण्यो ससार अमार
मने बेराग आणने प्रभु लीधो सजम मार ॥ चन्द्र ॥ २ ॥
चन्द्र आनन्द सदा करेरे पातक जावे दूर,
चन्द्र मने ससार तरे तो जावे कर्म अहूर ॥ चन्द्र ॥ ३ ॥
सुर नर असुर पिद्याधरु रे इन्द्र करे ज्यारी सेन,
मोदाराणा राजनी ज्यानु नमं अमख्याता देव ॥ चन्द्र ॥ ४ ॥
आर देव घणा देखियारे, जठं घणा जीवारी घात
कहो जीकां करो कुणत्तहे ज्यारे लागि चिन्तामणी हाथ ॥ चन्द्र ५ ॥
चन्द्र मरीखो कोनहीरे में जोयो सर्प ससार,
ओर डगेने समार मेरे, मोने चन्द्र उतारे पारं ॥ चन्द्र ॥ ६ ॥
बाणी अमृत मारखी जाये खीर समद को नीर-
वाणी सुन हीया में घरे तो उतरे भयजक तीर ॥ चन्द्र ॥ ७ ॥
चन्द्र प्रभु मरणे आणियोरे, हाथ जोड करु अरदास,
कृपा करि शिव दीजिये, रतनचन्द्र तुमारो दास ॥ चन्द्र ॥ ८ ॥
पूज गुमानचन्द्रजी गुरु भेठिया, घणो पाम्यो हर्ष हुकास,
समत अठारे पचासमें, कियो, साहापुर सहर चोमास ॥ चन्द्र ॥
६ ॥ इति ।



॥ लघु साधु वंदना ॥

साधुजी ने वदणा नितनित कीजे, प्रह उते सूर रे । प्राणी,
नीच गाते में ते नहीं जाये, पामे रिद्धि भरपूर रे प्राणी ।
साधुजीने वदणा नितर कीजे ॥१॥ म्होटाते पच महाव्रत पाले
छकायरा प्रतिपालेरे प्राणी, अपर भिचा मुनि सजती लेवे,
दोष बयालीस टालेरे प्राणी, साधुजी ने वदणा ॥ २ ॥ श्रद्धि
सपद मुनि कारमी जाणी, दीधी ससार ने पूठरे प्राणी, या पु
रपारी सेवा करता आठु कर्म जावे तूठरे प्राणी, साधुजीने वद-
णा ॥ ३ ॥ एक एक मुनिवर रमनारा त्यागी, एक एक ज्ञानरा
भडाररे प्राणी, एक एक मुनिवर व्यावचीया वैरागी ज्यांरागुणा
रो नाहीं पार रे प्राणी, साधुजी ने वंदणा ॥ ४ ॥ गुणसतावीस
करीने दीपे, जीत्या परीमा बाईसरे प्राणी, बावन तो अनाचार
टाले, ज्याने नमावु म्हारो शीपरे प्राणी, साधुजीने वदणा ॥ ५
जाज समान ते सत ऋपिश्वर, भवी जीवे बैठा आयरे प्राणी
पर उपगारी मुनि दाम न मागे, देवे ते मुक्ति पहोंचाय रे प्राणी;
साधुजी ने वदणा ॥ ६ ॥ ए सरणे प्राणी साता पावे, पावे ते
लील विलासरे प्राणी, जन्म जरा ने मरन मिटावे, फिर नहीं
आवे गर्भग्रासरे प्राणी, साधुजी ने वंदणा ॥ ७ ॥ एक वचन
जो सव्गुरु केरा राखे जो मनमाहि रे प्राणी, नर्क निगोद में
ते नहीं जावे इम कहे जिनराजरे प्राणी, साधुजीने वंदणा ॥ ८ ॥
जे उठी उत्तम प्राणी, सुणे साधुरो चखाखरे प्राणी,
सेवा करता पावे ते श्रमर विमाण रे प्राणी, साधुजीने
॥ ९ ॥ समत अशारे ने वर्ष अठावीसे बूसी गाम
र प्राणी, मुनि आशकरणी शिखे परे बोले हु उत्तम
दास रे प्राणी, साधुजी ने वदणा ॥ १० ॥ इति ॥

॥ श्री. पूज्य श्री रतनचदजी महाराज राय्यांरी ढाल ॥

॥ चौपन चौमासा ॥

दोहा—कुल बढजाती श्रावणी, अपना मुनी रतनेस ।

भवे जीवा तारण तीरण, चागा देश विदेश ॥ १ ॥

संजम चवदा वरस का, लीदो जग सुख त्याग ।

चौमासा चौपन कीया, ते दाखु पर राग ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥ मोटी हो जग माहे मोहणी या देसी ॥

सायपुरे बढादेरे भीलाडे हो दोय तीन चौमास ।

कीधा देश मेवाड़ में, बुध नीरमल हो, पडिया गुरु पास ॥ १ ॥

रतन मुनिसर मोटका, जीन मारग रो कीधो उद्योत ।

जा पुरपारा प्रसाद थी, मैं पामी हो शुद्ध समकीत जोत । रतन ॥ २ ॥

माहा मींदर बढलु रीयां, रायपुर ने हो जेपुर सुब ठामे ।

एक एक पांचुही नगर में, चौमासे ही लीदो विसराम । रतन ॥ ३ ॥

चार चार अजमेर भेदते, किशनगढ़ में हो दोय तीन पीपाड़ ।

दास नगी ने पाली इगारे कीया, जोधाणो हो चौमासा चार । रतन ॥ ४ ॥

रया चौपन चत्रमास में, भवीयाने हो तारिया समजाय ।

पुर पाटन विचरिया घणा, वसु पावन कीधो मुनीराय ॥ रतन ॥ ५ ॥

मुनी मडल नागोर में, चौमासो हो चौपनमो कीध ।

रीया पीपाड़ पधारिया, तन चेष्टा हो बड मरु लीखलीण ॥ रतन ॥ ६ ॥

गढ़ जोधाणे नरप तपे, हिन्दवाणा हो सूरज तखतेस ।

देव दीवाण परमा नीलो, मानीजे हो मुयो लखमेस ॥ रतन ॥ ७ ॥

* मुधाजी श्री लीधमीचदजी एक जोधपुर में प्रसिद्ध दीवान होगये हैं, आप सच्चे परम देवाणु गुरु भक्त थे, आपने श्री स्थानक-वासी जैनधर्म का बहुत ही उद्योत किया ।

सुण आगमें सतगुरु तणो, मन हरेकीया हो करीये दीदारो ।
 अरज करी दरवार में, हूतो जासु हो रीया पीपाइ ॥ रतन ॥ ८ ॥
 सुं कारण नरप पृथ्वीयो, कर जोड़ी हो जपे दिवाण ।
 मुनि रतनेस पधारिया, बडा पडित हो तीनु मतना जाण । रतन ९
 बाल ब्रह्मचारी, मोटा तपस्वी, निरलोभी हो उत्तम गुणखान ।
 धरम आचारज, म्हारे, जासु दरसन हो, होवे क्रोड कन्याण । रतन १०
 धरमारथ पक्ष जाण ने, भले जाओ हो कीधो भूपाल ।
 सज कर ततचीण नीमरीया, गुरु वादीया हो निज नेयण नीदाल ११
 बड़ा सीसु चरचा करी, गुरु आगल हो वीनत्रे लखमेसे ।
 पूज्य जोधाणे पवारीये, बीचरणा रो अवमर नहीं लेस ॥ रतन १२
 श्रीमुख कहे जाणीजसी, सुन समजीया हो मन हरस अपार ।
 गुरु वादी घर आवीया लारा सु हो, मुनि कीधो वीहार ॥ रतन ॥
 चैत्र कृष्ण पक्ष अष्टमी, जोधाणे * हो दाखल रतनेश ।
 विनयचद रहे पूज्यरा, जीणे सुनी हो छेला उपदेशे ॥ रतन ॥

॥ मुनि श्री चन्दनमलजी महाराज का स्तवन ॥

चाल देसी-उलिहारी है सनगुरुजी आपका ज्ञान की जी ।
 वन्दू वन्दू हो चन्दन मुनि को भाँसेजी,
 जन्मे पचम आरे भविजन के सुभाग्य से जी ॥ टेर ॥
 - जन्म हुआ रीया गाम मरुधर देश में जी, श्रीशवश पिता बछराज ।
 धरते धर्म ध्यान शुभ साजे, करते गरीब जीव के काजे ॥ वन्दू ॥ १ ॥

* जोधाणे को जोधपुर कहते हैं जो मारवाड़ की राजधानी है ॥

माता रिद्धी, नाई थी, आपकी जी रत्नती धर्म विषय में प्यार ।
 पाले भ्रमिका प्रतयार, मनमें निशदिन विमल विचार ॥ वन्दू २
 शुभ स्वप्न देखा, निज मेज में जी, वह स्वप्न था अधिक रसाल ।
 लम्बे कुवर अधिक सुकुमाल, चन्दन नाम अमित गुण पाल ॥ वन्दू ३ ॥
 बाल वय, उगनीसे बीममें जी, पत्रमी कृष्ण जेष्ठ का माम ।
 लिये सयन गुरुजी पास, पाछी नाम शहर में खास ॥ वन्दू ४ ॥
 विनय मक्ती करी गुरुजी पास में जी, ननगये आप शास्त्र भठार ।
 भ्रमिजीवों के बने, आधार, निर्मल पाले मुनि आचार ॥ वन्दू ५ ॥
 ज्ञान अश्व चढ़े तपते गले जी, दिये दुष्ट कर्म को मार ।
 मनमें शुद्ध भावनाधार, बाल ब्रह्मचारी बलिहार ॥ वन्दू ० ॥ ६ ॥
 गच्छ मानस सरोवर रूप है जी, जल है ज्ञान क्रिया निरधार ।
 उग्रमा सन्त तरंग विचार, जिममें दया कमल सुखसार ॥ वन्दू ० ॥ ७ ॥
 मुनि आचार सुगन्धी के लोभ मे जी, आपे भक्त भ्रमर सुखकार ।
 वृत्ती करते मुनि आचार, कई जन लेते ब्रत को धार ॥ वन्दू ० ॥ ८ ॥
 यम नियम रूप मच्छ घूमते जी, है यह मानसरोवर महान,
 चन्दन मुनि हंस मम जान, क्रीड़ा करते ये गुणवान ॥ वन्दू ० ॥ ९ ॥
 जैसे तप्त पुष्प अंग उपरे जी, चन्दन लेप परम सुखदाय ।
 शीतल होती उसकी काय, जाते तन मन अति हुलसाय ॥ वन्दू १ ० ॥
 जैसे भक्तजनों के चित में जी, वसते चन्दन मुनी का नाम ।
 मिटते तन मन ताप तमाम, होते सिद्ध सभी सब काम ॥ वन्दू १ १ ॥
 चन्दन मुनिर के मुखचद्र को देखके जी, हर्षित होते भरी चकोर ।
 आवे दौड़ी आपकी और, करते मधुर गुणों का शार ॥ वन्दू १ २ ॥
 बैठे सिंहासन वाणी वागरेजी, सुनकर मधुर वचन का शार ।
 र्षे भविजन रूपी मोर, चित्त रूगाने मुनिकी और ॥ वन्दू १ ३ ॥

तारामध्य शोभे त्रिमंचदा शिष्य वृन्द में । तिम मुनिन्दाजी,
 मुनि आप बालब्रह्मचारी, जिनके गुण की बलिहारी ॥ २ ॥
 जल मीन के जेमे आधार, वायु जिमी सच ससारजी ।
 तिमी आप सकल जन धारी, जिनके गुण की बलीहारी ॥ ३ ॥
 जिमी माता सुत को पाले, तिमी आपगच्छ सभाले जी ।
 मुनि तन के उग्र विहारों, जिनके गुण की बलीहारी ॥ ४ ॥
 आप सदा चिरजीव रहना, भवजन मन हर्षित करना,
 यही सच चाहते नर नारी, जिनके गुणकी बलिहारी ॥ ५ ॥ इति

॥ मुनिगुण स्तवन ॥

प्यारे पूज्य बड़े गुणधारी है, आरतन सम्प्रदाय जारी है ॥ १ ॥
 सोपाचन्दजी महा विद्वान, तसु शिष्य सोभीत है सुजान ।
 मुनि भोजराज ब्रह्मचारी है ॥ प्यारे ॥ १ ॥
 अमरचद स्रों के जान, लाभचदजी शशि समान ।
 सागर आज्ञाकारी है ॥ प्यारे ॥ २ ॥
 लालचद क्षमा के सागर, हसतीमल बहु गुण रतनागर ।
 चोयमल सुरकारी है ॥ प्यारे ॥ ३ ॥
 लखमीचदजी का चित्त हुलास, विद्या का करते अभ्यास ।
 हसरज * ये अर्ज गुजारी है ॥ प्यारे ॥ ४ ॥
 सम्भत् उगणीसे अस्मी साल कार्तिक माम है बडा रसाल ।
 शुद्धी तेरस को बुधवारी है ॥ प्यारे ॥ ५ ॥

* यह श्रीमान स्वर्गीय सेठ सुगमलचदजी करणवट के पुत्र हैं आप कविता, स्तवन और छन्द, पद्य अछड़े और मुन्द्र बनाते हैं आप की उमर इस समय २१ वर्ष की है, "यथा नाम तथा गुण" आप स्थानकजासी जैन हैं और जोधपुर निवासी हैं ।

॥ उमवेशक स्तवन ॥

चेतन रखना अब हुशियारी ओ ॥ टेर ॥

मानुष अवतार, पायो सार-समाकित धार ।

प्यारे करलो पर उपकारी ओ ॥ १ ॥

कर्मों के सग, करलो जग, होनी सग ।

ज्ञान घोड़े पे कर अमवारी ओ ॥ २ ॥

सुमलो व्याख्यान, चतुर सुजान, देशो दान ।

घट में जमा करो अंगीकारी ओ ॥ ३ ॥

सीधो तुम ज्ञान, तज अमिमान, चमता ।

॥ सुगुरु, सीख करो स्वीकारी ओ ॥ ४ ॥

पाजुई जोर, करते शोर, अतही जोर ।

तपजप माल को लेत चुराई ओ ॥ ५ ॥

गफलत से जाग, रख अराग, ममता त्याग ।

प्यारे ज्ञान की कर रखगाली ओ ॥ ६ ॥

कहे इसराज, सारो काज, धर्म की जहाज ।

माही बैठ होवो भवपारी ओ ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ पूज्य श्री शोभाचन्द्रजी महाराज का स्तवन ॥

राग — समदण जांगला धारी बलिहारी हो ।

पूज्य शोभाचन्द्रजी जागता आपरी बलिहारी हो ॥ टेर ॥

पड़े पुनपन्त, महा गुणवत ।

उत्तम सन्त धारी कीरती इधरु अपारी हो ॥ पूज्य ॥ १

पंडित विद्वान, गुणरी खान, चतुर सुजान ।

आप करते हो परं उपकारी हो ॥ पूज्य ॥ २ ॥

देवो उपदेश, तजकर द्वेष, कर्मों को पेश ।

इस 'तन' को लियों वजनाली हो ॥ पूज्य ॥ ३ ॥

सूत्रों के जाण, शुद्ध व्याख्यान, देवो ज्ञान ।

सुनकर प्रमत्त भय नरनारी हो ॥ पूज्य ॥ ४ ॥

पच महाव्रत पालो दोषण टालो, कुंजर गत चालो ।

हरिजा को देख सभारी हो ॥ पूज्य ॥ ५ ॥

सज्जन कर सेव, पावो भय है गुरु देव ।

॥ एतो प्रगट हुए अतारी हो ॥ पूज्य ॥ ६ ॥

सौहत जग भान, अवसर जान, विनती मान ।

आप कियों चौमासा सुखकारी हो ॥ पूज्य ॥ ७ ॥

कर हमपर मेहर, आये शहर, ज्ञान की लहर ।

थारी लागी है माने अति प्यारी हो ॥ पूज्य ॥ ८ ॥

हसराज यह गावे, सेवा चाये, सीस नमावे ।

दीजो मोय भवदाधि तारी हो ॥ पूज्य ॥ ९ ॥ इति ॥

॥ श्री नेमिनाथजीका स्तवन ॥

प्रभुजी जावाला धारी बलिहारी हो (टेर)

सेवा की नद, आनंद के दे, उगत चंद ।

जग में आप हुए ब्रह्मचारी हो ॥ प्रभु० १ ॥

यदुपति धका, पूरत है ढका,

नहीं कोई शको, धिन धिन तुम अवतारी हो ॥ प्र० २ ॥

आयुधशाला जावे, संख बजावे ।
 कृष्ण घबरावे, आवत कर ललकारी हो ॥ प्र० ३ ॥
 कृष्ण बाय पसारी, नमायडारी ।
 नेम पसारी लटक गये गिरघारी हो ॥ प्र० ४ ॥
 कृष्ण मन सकुचावे, राज यों जावे ।
 भ्रात समझावे परणाश्रो एकनारी हो ॥ प्र० ५ ॥
 कृष्ण महल सिधावे, नेम बुलावे ।
 व्याज मनावे, जान वनावे, हृदमारी हो ॥ प्र० ६ ॥
 वनडो अति सोवे, मनडो मोवे ।
 प्रसन्न चित्त होने, मंगल गावे नर नारी हो ॥ प्र० ७ ॥
 पशु करत पुकारी, करुणा धारी ।
 त्यागी है नारी, चढगये गढ़ गिरनारी हो ॥ प्र० ८ ॥
 गावें हसराज, अहो जिनराज ।
 सारो काज थाने बन्दू बार हजारी हो ॥ प्र० ९ ॥ इति

॥ श्री पार्श्वनाथजीका स्तवन ॥

मणमू पार्श्वजिनन्द सुखकारी हो ॥ टेर ॥
 अश्वमेन रांय, भोमा माय, तिन कुख आय ।
 आप प्रगट भये अतारी हो ॥ प्र० १ ॥
 चिन्तामणि जान, अविचल भान, मेरु समान ।
 एतो करते हैं उपकारी, हो ॥ प्र० २ ॥
 गगातट जाय कमठ हटाय, नाग बचाय ।
 प्रभुजी किया है सुरधवतारी हो ॥ प्र० ३ ॥

सजम चित्त लाय, केवल पाय, कर्म खपाय ।
प्रभूजी पहुता है मोक्ष मजारी हो ॥ प्र० ४ ॥
अहो जिनराय, प्रणमु पाय, मन हुलसाय ।
हंसराज यह अरज गुजारी हो ॥ प्रणमु ५ ॥ इति ॥

पालनो ।

रतन जड़तरो पालनीयो कोई रेसम सेती बनीयो रे कोई ।
जग जननी ने जनीयो रे माताजी हुलरावे. नेमजीने रागसुखावेरे ॥ १ ॥
कोई सोनारी सांकल लवे कोई पालनीये बधावे ।
कोई अदबीचे झुमर टांकेरे. माताजी हुलरावे ॥ २ ॥
कोई सिर पर टोपी मेले कोई अधर हात सु भेले ।
नानडियो बालक खेलेरे माताजी हुलरावे ॥ ३ ॥
मनगमतो बालक खेलेरे माताजी हुलरावे. नेमजीने रागसुखावेरे ॥ ४ ॥
कोई खोलामें खिलाने, कोई काजलटीकी देवे ।
कोई काना में घात केवेरे, माताजी हुलरावे ॥ ५ ॥
कोई हाता में हुलरावे, कोई पालनिया पोटावे ।
कोई कड़ियां दूध पिलावेरे, माताजी हुलरावे ॥ ६ ॥
कोई गीरी गींदोड़ा लावे, कोई घेवरिया छटावे ।
कोई खाजा लाइ लावेरे माताजी हुलरावे ॥ ७ ॥
कोई चकरी भरालाव, कोई नीरद कली रिक्तावे ।
कोई घुघरिया घमकावे, माताजी हुलरावे ॥ ८ ॥
कोई चमक नदिं सु जागे, कोई रिमझिम करतो भागे ।
धारी सुरत सोवणी लागे, माताजी हुलरावे ॥ ९ ॥

आयुषशाला जावे, संख बजावे ।
 कृष्ण घबरावे, आवत कर ललकारी हो ॥ प्र० ३ ॥
 कृष्ण बाय पसारी, नमायडारी ।
 नेम पसारी लटक गये गिरधारी हो ॥ प्र० ४ ॥
 कृष्ण मन सकुचावे, राज यों जावे ।
 भ्रात समभावे परणाश्रो एकनारी हो ॥ प्र० ५ ॥
 कृष्ण महल सिधावे, नेम बुलावे ।
 व्याघ्र मनावे, जान वनावे, हृदभारी हो ॥ प्र० ६ ॥
 वनडो अति सोवे, मनडो मोवे ।
 प्रसन्न चित्त होवे, मगल गावे नर नारी हो ॥ प्र० ७ ॥
 पशु करत पुकारी, करुणा धारी ।
 त्यागी है नारी, चढगये गढ़ गिरनारी हो ॥ प्र० ८ ॥
 गावें हसराज, अहो जिनराज ।
 सारो काज थाने बन्दू वार हजारी हो ॥ प्र० ९ ॥ इति

॥ श्री पार्श्वनाथजीका स्तवन ॥

पणमू पार्श्वजिनन्द सुखकारी हो ॥ टेर ॥
 अश्वमेन राय, भोमा माय, तिन कुख आय ।
 आय प्रगट भये अवतारी हो ॥ पण० १ ॥
 चिन्तामणि जान, अविचल मान, मेरु समान ।
 एतो करते हैं उपकारी, हो ॥ प्र० २ ॥
 गगातट जाय कमठ हटाय, नाम बचाय ।
 प्रभुजी किषा है सुरश्वतारी, हो ॥ प्र० ३ ॥

सजम चिन्न लाय, केवल पाय, कर्म खपाय ।
प्रभूजी पहुता है मोक्ष मजारी हो ॥ प्र० ४ ॥
अहो जिनराय, प्रणमु पांय, मन हुलसाय ।
हंसराज यह अरज गुजारी हो ॥ प्रणमु ५ ॥ इति ॥

पालनो ।

रतन जड़तरो पालनीयो कोई रेसम सेती बनीयो रे कोई ।
जग जननी ने जनीयोरे माताजी हुलरावे नेमजीने रागसुवावेरे ॥ १ ॥
कोई सोनारी साकल लवे कोई पालनीये बधावे ।
कोई अदबीचे भुंवर टांकेरे, माताजी हुलरावे ॥ २ ॥
कोई सिर पर टोपी मेले कोई अधर हात सु भेले ।
गानडियो बालक खेलेरे माताजी हुलरावे ॥ ३ ॥
गनगमतो बालक खेलेरे माताजी हुलरावे, नेमजीने रागसुवावेरे ॥ ४ ॥
कोई खोलामे खिलावे, कोई काजलटीकी देवे ।
कोई काना में बात केवेरे, माताजी हुलरावे ॥ ५ ॥
कोई हाता में हुलरावे, कोई पालनिया पोटावे ।
कोई कडियां दूध पिलावेरे, माताजी हुलरावे ॥ ६ ॥
कोई गीरी गीदोड़ा लावे, काई घेरिया छटावे ।
कोई खाजा लाइ लावेरे माताजी हुलरावे ॥ ७ ॥
कोई चकरी भरालावे, काई नीरद कली रिभावे ।
कोई घुघरिया घमकावे, माताजी हुलरावे ॥ ८ ॥
कोई चमक नौदिसु जागे, काई रिमभिम करतो भागे ।
पारी सुरत सोवणी लागे, माताजी हुलरावे ॥ ९ ॥

कोई खूबचदःसनाजोगे, कोई रीध पामे पुणजोगे ।
कोई करणीरा फल जाखेरे, माताजी हुलरावे ॥ १० ॥
कोई करणीरा फल पावेरे, माताजी हुलरावे नेमजीने, रागसुवावेरे १

॥ श्री जंबु स्वामीजी रो स्तवन ॥

राजगीरीनो वासीयोजी जंबु नाम कुमार ॥
अपभक्तजीनेो डीरुरोजी, भद्राजारी माय ॥
जंबु कखो मान लेरे, जाया मत लेवो सजम भार ॥ १ ॥ देसी
सुधर्मा स्वामी पधारीयाजी, राजगीरी रे माय ॥
कोणीक वंदन चालीयाजी, जंबुजी वदन जाय ॥ जंबु ॥ २ ॥
भगवत वाणी वागरीजी, सर्व जिना हितकार ॥
वाणी सुणी वैरागियाजी, जाणयो अथीर ससार ॥ जंबु ॥ ३ ॥
घर आया माता कने जी बोले ' वारंवार ॥
अनुमत दीजे मोरा मातजी, में तो लेसु मजमभार ॥ जंबु ॥ ४ ॥
ऐ देसी माता मोरी सांभलाय, जननी लेसु सजम भार ॥
ऐ आठोई कामनीयारे, जंबु अवछररे ऊनियार ॥
परनि ने किम परिहरो, ज्यारे किम निकलसी जमार ॥ जंबु ॥ ५ ॥
ऐ आठोई कामणीयारे, जंबु तुज बिना बिलखारे थाय ॥
रमिया, ठमिया, बिना नासरे, ज्यारो वदन कमल कमल
बिलखाय ॥ जंबु ॥ ६ ॥
मत हिणो कोई मानवी, माता मिथ्या तणो,
पररमणी सु राची रया, माता दुर्गत जासी ॥ ७ ॥

पाली पोमी मोटो क्रियारे, जवु इम किम दो छीटकाय ॥
 माता पिता न मेल्या रोवतारे, धारे दयां नही दिलमाय ॥जंबु॥८॥
 ऐ लोठो पाणी पिउए, माता मात ने तात अनेक ॥
 सगला रे दया पालसुए, जरणी आप समान लेख ॥माता॥६॥
 ध्यु आंधारे लाकड़ीरे, जवु तुमज प्राण आधार ॥
 तुज विनारे जग सुनोरे जाया, जरनी जितव राख ॥जबु १०॥
 रतन जडितरो पिंजरोए माता, सुभो तो जाणे के फद ॥
 काम भोग ससार ना, माता ज्ञानी बताया जुठाफद ॥माता॥११॥
 पच महाव्रत पालणारे जवु, पाचो ही मेरू समान ॥
 दोष बयालीस टालणारे जवु, लेणो सुजतो आहार ॥ जवु ॥ १२ ॥
 पच महाव्रत पालसुए माता, पावुही मेरू समान ॥
 दोष बयालीस टालसुए माता, लेसु सुजतो आहार ॥माता॥१३॥
 सजम मार्ग दोषलोरे जवु, चलनो खाडा की धार ॥
 नदी के किनारे रूखडोए माता, कदियक होय विनास ॥माता॥१४॥
 चांदा विना केसी चादनी रे, जवु तारा विना केसी रात ॥
 वीर विना केसी बेनड़ी रे, जवु जुरे वारवार ॥ जवु ॥ १५ ॥
 दिप विनारे मदिर सुणोरे, जवु पुत्र विना परिवार ॥
 कथा विना केमी कामनीरे, जवु जुरे वाराई मास ॥जबु॥१६॥
 मात पिता मेला मिल्याए माता, मिलीयो अनती वार ॥
 तारण समर्थ को नही ए माता पुत्र पातो परिवार ॥माता॥१७॥
 मोह मत करो मोरिमाताजिए जरणी मोहो किया वधे कर्म ॥
 हालर हुनर काई करो ए माता, करोनी जिन जिनो धर्मा ॥माता॥१८॥
 ऐ आठोई कामनीयारे जवु सुख विलसो ससार ॥
 दिन पाछा थकारे जवु लिजो सजम भार ॥ माता ॥ १९ ॥

कोई चूचद, सनाजोगे, कोई रोध पामे पुणजोगे ।
 कोई करणीरा फल जाणेरे, माताजी हुलरावे ॥ १० ॥
 कोई करणीरा फल पावेरे, माताजी हुलरावे नेमजीने, रागसुखांवेरे ११

॥ श्री जयु स्वामीजी रो स्तवन ॥

राजगीरीनो वासीयोजी जयु नाम कुमार ॥

श्रुपभदत्तजीनेा डीरुोजी, भद्राजारी माय ॥

जंबु कळो मान लेरे, जाया मत लेवो सजम भार ॥ १ ॥ देसी

सुधर्मा स्वामी पधारीयाजी, राजगीरी रे माय ॥

कोणीक वंदन चालीयाजी, जयुजी वंदन जाय ॥ जयु ॥ २ ॥

भगवत वाणी वागरीजी, सर्व जिवा हितकार ॥

वाणी सुणी वैरागियाजी, जाययो अथीर सुसार ॥ जयु ॥ ३ ॥

घर आया माता कने जी बोले ' वारंवार ॥

अनुमत दीजे मोरा मातजी, में तो लेसु सजम भार ॥ जंबु ॥ ४ ॥

ऐ देसी माता मोरी सामलाय, जननी लेसु सजम भार ॥

ऐ आठोई कामनीयारे, जयु अचररे ऊनियार ॥

परनि ने किम परिहरो, ज्यारे किम निकलसी जमार ॥ जयु ॥ ५ ॥

ऐ आठोई कामणीयारे, जयु तुज बिना विलखारे थाय ॥

रमिया, ठमिया, बिना नासरे, ज्यारो वदन, कमल कमल

निलखाय ॥ जयु ॥ ६ ॥

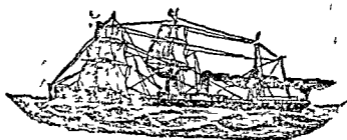
मत हिणो कोई मानवी, माता मिथ्या तणो भरपूर ॥

पररमणी सु राची दुर्गा ी जरूर ॥ माता ॥ ७ ॥

पाली पोमी मोटो क्रियारे, जबु इम किम दो छीटकाय ॥
 माता पिता ने मेल्या रोवतारे, धारे दया नहीं दिलमाय ॥जबु॥८॥
 ऐ लोठो पाणी पिउए, माता मात ने तात अनेक ॥
 सगला रे दया पालसुए, जरणी आप समान लेख ॥माता॥९॥
 श्यु आंधारे लाकड़ीरे, जबु तुमज प्राण आधार ॥
 तुज बिनारे जग सुनारे जाया, जरनी जितब राख ॥जबु॥१०॥
 रतन अडितरो पिंजरोए माता, सुनो तो जाणे के फद ॥
 काम भोग ससार ना, माता झानी बताया जुठाफद ॥माता॥११॥
 पच महाव्रत पालणारे जबु, पाचो ही मेरू समान ॥
 दोष बयालीस टालणारे जबु, लेणो सुजतो आहार ॥जबु॥१२॥
 पच महाव्रत पालसुए माता, पाबुही मेरू समान ॥
 दोष बयालीस ठालसुए माता, लेसु सुजतो आहार ॥माता॥१३॥
 सजम मार्ग दोषलोरे जबु, चबनो साडा की धार ॥
 नदी के किनारे रूबड़ोए माता, कदियरु होय बिनास ॥माता॥१४॥
 चांदा बिना केसी चादनी रे, जबु तारा बिना केसी रात ॥
 वीर बिना केमी बेनड़ी रे, जबु जुरे वारवार ॥जबु॥१५॥
 दिप बिनारे मंदिर सुणारे, जबु पुत्र बिना परिवार ॥
 कथा बिना केमी कामनीरे, जबु जुरे बाराई मास ॥जबु॥१६॥
 मात पिता भेला मिल्याए माता, मिलीयो अनती वार ॥
 तारण समर्थ को नहीं ए माता पुत्र पातो परिवार ॥माता॥१७॥
 मोह मत करो मोरिमाताजिए जरणी मोहो किया बधे कर्म ॥
 हालर हुनर कई करो ए नाता, करोनी जिन जिनो धर्मा ॥माता॥१८॥
 ऐ आठोई कामनीयारे जबु सुख विलसो ससार ॥
 दिन पाछा थकारे जबु लिजो सजम भार ॥ माता ॥ १९ ॥

ऐ आठोई कामणीयाऐ माता समजाई ऐकण रात ॥
जिण जिनो धर्म ओल खियाऐ माता सजम लेसी मोरी साथ
माता ॥ २० ॥

माता पिता ने तारीयारे जंबु तारी छे आठोई नार ॥
सासु सुसरा ने तारियारे जंबु पाच से प्रभवा परवार ॥ माता २१ ॥
पाच से सताबिस जणारे जंबु लिनो सजम भार ॥
इग्यारे जणा मुगते गया, ज्यारे चरते जेजेकार ॥ जंबु ॥ २२ ॥



शांतीनाथजीरो जाप ।

चेईत्ता. भारद्. वाम. ॥ चक्रवर्द्धी. महिर्हीउ ॥
शाती, शांती करेलोए ॥ पत्तोगइमणत्तरं ॥ १ ॥

॥ श्री शांतीनाथ स्वामीनो छंद ॥

शातीनाथ को कीजे जाप, क्रोढ़ भवाना कांटे पाप
शांतीनाथजी म्होटा देव, सुर नरे सार जेहनी सेव ॥ १ ॥
दुख दारिद्र होवे दुर सुप्त सपति होवे भरपूर
ठग फागर जाने भाग, चळती होवे शीतळ नाथ ॥ २ ॥
राज लोकमा कीर्ती घणी, शांती जिनेश्वर माथे धणी ॥
जो ध्यावे प्रभुजी तुं ध्यान, राजादेवे अर्धीकु मान ॥ ३ ॥
गङ्गुं पीडा मिटजाय, देखी दुस्मन लागे पाय ।
सगळो भाग्यो मननो भर्म, पाम्यो सम काठ्या कर्म ॥ ४ ॥
सुणी प्रभु मोरी अरदास हुं सेवक तमे पुरो आस ॥
मुज चिंतीत कारज करो, चिंता आरती चीज हरो ॥ ५ ॥
मेटो म्हारा आळ जजाळ, प्रभु मुजने तु नयण निहाल ॥
आपनी कीर्ती ठामोठाम, सुधारो प्रभु म्हारा काम ॥ ६ ॥
जो नित्य नित्य प्रभुजीने रटे, मोती चगला कटे ।
चेप लावण दोनु जळ जाय, त्रिपद आपद कट जावे छांवि ७
शातिनाथना नामर्था थाय आखे तुठ पडळ कठजाय ।
कमलो पीलो जव जव भररे, शातिजिनेश्वर शाता करे ॥ ८ ॥
गरमी ध्याधी मिटावे रोग, सयण मित्रनो मले सजोग ॥
दवा देवने दीस और, नही चाले दुरमन को जोर ॥ ९ ॥

लुठारां सब जात्रे नाश, अर्जन फीटी होवे दास
 शांतीनाथनी कीर्ती घणी, कृपा करो तुम त्रिभुवन धरणी ॥ १० ॥
 अरज करुं छुं जोड़ी हात, आपसु नहीं कोई छानी नात ॥
 देखी रखा छो पोते आप, हो प्रभुजी म्हारा पाप ॥ ११ ॥
 मुज मन चितित करिये कान, राखो प्रभुजी म्हारी लाज ॥
 तुम तम जग माही नहीं कोय, तुम भजवार्थी शाता होय ॥ १२ ॥
 तुम पासे चले नहीं मरकी रोग, ताव तेजरो नाव तोड ॥
 मारी मिठाई कीधी प्रभु शात, गुणनो नही आपे अत ॥ १३ ॥
 तुमने समरे साधु सती, तुमने समरे जोगी जती ॥
 काटो सकट राखो मान, अविचळ पद आपो स्थान ॥ १४ ॥
 सवत अठारे चोरासी जाण, देश माळवो अधिक वखाण ॥
 शहर जावरो चेतरे मास, हू प्रभु तुम चरणाको दास ॥ १५ ॥
 वपिरुधनाथजी कीधो छंद, काटो प्रभुजी म्हारा फंद ॥
 हू जोळ प्रभुजीनी बाट, मुज आरती चिता सविकाट ॥ १६ ॥

॥ श्री पारसनाथ स्वामीजी रो स्ववन ॥

अहो अहो पारस्वजी मुज मलीयारे मारा मनरा मनोरथ फलीया,
 अहो २ वारण्डरे ॥ १ ॥
 थारी सुरत मोहनगारी रे सहु सगन लागे छे पारी रे,
 ऐक नागण नाग ऊमारी रे ॥ अहो ॥
 अलवेली सुरत प्रभु थारी रे, थारा मुत्वड़ा ऊपर जाळ वारी रे,
 तोने मोये सुर अमतारी ॥ अहो ॥ २ ॥
 धन धन देवादी देवारे, सुरनर करत तुमारी सेवा रे,
 आपो सपत्त ॥ अहो ॥ ३ ॥

तुम नीलवरण सुरदाई रे, तुम सुरव अती मोहनगारी रे,
तुम दर्शन हरक अपारी रे ॥ अहो ॥ ४ ॥
प्रभु ते विस्माजी जिनरायारे माता भोमा देवीजी ना जायारे,
हमने दर्शन देवोनी दयाल ॥ अहो ॥ ६ ॥
जे पारमतणो गुण गासी रे भव भवना पातीक जासी रे,
तेनो ममकित नीरमळ थासी रे ॥ अहो ॥ ७ ॥
हूतो लुली २ लागु छु पायारे मारा ऊरमे थारा गुण गायारे,
ईम माणक विजय गुण गाया ॥ अहो ॥ ८ ॥

चिंतामणी पारस्वनाथ, हारे हारे पारस्वनाथ ॥ टेर ॥

अरज करू करजोड हारे करजोड ॥

आसा तो मारी पुरजोजि पारस्वनाथ ॥ १ ॥

अश्वसेण रायरा कनार हारे २ कवार ॥

भोमादेराणी जात्रियाजी पारश्वनाथ ॥ चींता ॥ २ ॥

मोच्यकरायो सुरईन्द्र हारे २ सुरईन्द्र ॥

तीलोकी जस छात्रीयो पारश्वनाथ ॥ चींता ॥ ३ ॥

जलता चचाया नागणी नाग हारे नागणी नाग ॥

प्रभुजी उपगारीयाजी पारसनाथ ॥ ४ ॥

हुवा धरणेन्द्र माहाराज हारे २ माहाराज ॥

साँसण रूखवालीयाजी पारसनाथ ॥ ५ ॥

जो सेने प्रभुता ये हारे प्रभुता ये ॥

ज्यारी तो सका सुरहरोजी पारश्वनाथ ॥ चींता ॥ ६ ॥

पग २ हुवे प्रभु जित हारे प्रभु जित ॥

रोग सब हरेठलेजी पारसनाथ ॥ चींता ॥ ८ ॥

धन नहीं सांगु प्रभु माल हारे २ प्रभु माल ॥
सनापुरी मे मेलदीजो पारशनाथ ॥ चींता ॥ ८ ॥
सांगु सीतपुर कनो राज, हारे प्रभुराज ॥
गरम नहीं आवसाजी पारसनाथ ॥ चींता ॥ ९ ॥
गुरु हीरालालजी प्रसाद हारे २ प्रसाद ॥
चौधमलजी ईम भणेजी पारसनाथ ॥ चींता ॥ १० ॥
संमत १६६८ साल हारे अडसठ साल ॥
रामपुर गुण गावीयाजी पारसनाथ ॥ चींता ॥ ११ ॥

(चांदा प्रभुजीनोतवनः)

श्री चदाप्रभु मो मन भावेरे, दुजो देव दाय न आवेरे ॥ टेरे ॥
चदपुरी नगरी मली रे माहासणे राय ऊदार ॥
लीखम्हाराणी दिपती ज्यारी कुल लिया अतारे ॥ चंदा ॥ १ ॥
समार ना सुख भोगणेरे जाणो सत्तार असार ॥
मन वैरागे आणेन प्रभु लीधो सजम भार ॥ चदा ॥ २ ॥
चद आनद सदा करे पातीक जावे दुर ॥
चद भजे समार तीरे तो जाणे कर्म अकुर ॥ चदा ॥ ३ ॥
सुरनर असुर विध्या धरुंरे ईन्द्र करे जारी सेव ॥
मोटा राणा राजनि ज्याने नमे असख्याता देव ॥ चदा ॥ ४ ॥
अरदेव गणा देखीया जठे घणा जिपारी धात ॥
कहोजी काकरो कुण लरे ज्यारे लागो चींन्तामणी हात ॥ चदा ॥
घाणी ईभ्रत सारखी जाणे खीर समद्र का नीर ॥
बाणी सुण हाया मे धरतो ऊतरे भवजल तीर ॥ चदा ॥ ६ ॥

चंद्र सरीखो नही मे जोयो सरथ ससार ॥
 और डुबाये ससार जो मोने चद उतारे पार ॥ चदा ॥ ७ ॥
 चद मभु सरणी आविया हात जोड करू अरदास ॥
 किरपा करो भिन्न दिजीये रतनचंद तुमारो दास ॥ चदा ॥ ८ ॥
 पुज्य गुमानचदजी गुरु भेठीया गणा पाम्यो हरक हुलास ॥
 समत १८५० मा कयो सायपुर सेहर चोमास ॥ चदा ॥ ९ ॥

श्री गोतमस्वामीजी नो छंद ।

गिरजिणेश्वर केरो शिप, गौतमनाम जपो निश दिश ॥
 जो किये गौतमनु ध्यान, तो घर विळशे नवे निधान ॥ १ ॥
 गौतम नामे गिरिवर चडे, मन वळित इळो मण्डे,
 गौतम नामे नाये रोग, गौतम नामे सर्व सजोग ॥ २ ॥
 जे वैरी वीरूआ वकडा, तस नामे नावे दुकडा ॥
 भुत प्रेत नवि मडे प्राण, ते गौतमना करू बरसाण ॥ ३ ॥
 गौतम नामे निर्मळ काय, गौतम नामे बाधे आय,
 गौतम जिनशासन शणगार, गौतम नामे जय जयकार ॥ ४ ॥
 साळदाळ सु रहा धून गोळ, मन वळित कापड तथोळ,
 घरसु धरणी निर्मळ चित, गौतम नामे पुत्र विनीत ॥ ५ ॥
 गौतम उभ्यो अविचळ भाण, गौतम नाम जपो जग जाण,
 म्होटा मंदिर मेरू सनान, गौतम नामे सकळ विहाण ॥ ६ ॥
 घर मयगल घोडानी जोडे, वारू पहोचे वळित कोडे,
 महियण माने म्होटा राय, जो त्रुटे गौतमना पाय ॥ ७ ॥
 गौतम प्रणम्या पातक टळे, उतम नरनी संगत मळे,
 गौतम नामे निर्मळ ज्ञान, गौतम नामे बाधेवान ॥ ८ ॥
 पुन्यवत अब धारो सहु, गुरु गौतमना गुण छे बहु,
 कहे लावण्य समय कर जोड, गौतम तुटे सपती कोड ॥ ९ ॥ संपूर्ण

श्री आदिनाथ प्रसन्न ।

श्री चिन्तामणि पार्श्वनाथ स्तवन ।

चित्त वेग हरो चिन्तामणि पार्श्वनाथ हमारी ॥ टेरे ॥
धरणिद्र पदमावती हुयो, तेरे सेवक को हितकारी ॥ चि० ॥ १ ॥
चिन्तामण पाया सुगु प्रगटे इच्छा पूरे सारी,
तु आनन्द कन्द भोमा सुत महिमा बढत तिहारी ॥ चि० ॥ २ ॥
यो चिन्तामण कमिहन राखे आपे श्रद्ध अपारी,
तु चेतन चिन्तामण पारप परतरु पर उपकारी ॥ चि० ॥ ३ ॥
यो चिन्तामण जड़ पुद्गल है, तिनही के गुण भारी ।
तु ठाकुर त्रिभुवन को स्वामी, आसा पूरवारी ॥ चि० ॥ ४ ॥

॥ छन्द आदिनाथनो ॥

तुम तिरण तारण भव निवारण भविकमन आनन्दन,
श्री नाभिनदन जगत बदन श्री आदिनाथ निरंजनम् ॥ १ ॥
तुम आदिनाथ अनाद सेवो, भावकर पूजा करो,
कैलास गिरिवर श्रुपभ जिनवर चरण कमल हिरदे धरो ॥ २ ॥
ध्यान धूप मान पुष्प अष्ट कर्म हुतासन ।
सुमा जाप सतोष सेवा, पूजो देव निरंजनम् ॥ ३ ॥
तुम अजितनाथ अजित जीते अष्ट कर्म महाबली,
यह विरध मुण्णकर सरण आयो कृपा कीजे नाथजी ॥ ४ ॥
तुम चंद पूरण चंदलाक्षण चंद पुरी परमेश्वरो
महासयन नंदन जगत बदन श्री चंदाप्रभु जिने ॥ ५ ॥

तुम बाल ब्रह्म विवेक सागर, भविक कमल प्रकासन ।
 श्री नेमिनाथ महत दिनकर पाप तिमिर विनासन ॥ ६ ॥
 जिन तजिय राजल, राज कन्या, वाम सेन्या बसकरी ।
 चारित्र्य रथ चढ भये दुलेह सेनक सेव सुन्दर वरी ॥ ७ ॥
 तुम तरण तारण सुख कारण इद्र मिलि अस्तुति करे,
 श्री पार्श्वनाथ जिनद के पद सुर, असुर-पाये परे ॥ ८ ॥
 तुम कर्म घाता मोक्ष दाता दीन जान दया करो,
 सिद्धारथ नंदन जगत वदन श्री वर्धमान जिनेश्वरो ॥ ९ ॥
 सुख देवो दुख भेटो, यह मोरी बात है ।
 मो गरीब की वीनती सुन जो श्री भगवान है ॥ १० ॥
 दर्सन कीजे देव को अधम उधारण वासना ।
 सुरगती का सुख भोगो पावो मोक्ष अवासना ॥ ११ ॥
 ऐसी महिमा तुम धिये, और धन नहीं कोइए ।
 जो चद्रमा जोत होवे नहीं तारागण सोहीए ॥ १२ ॥

॥ अथ कवित्त ॥

पर्व तयासी लाख कियो जिनराज सुख एक लाख रयो जद
 ऐसी मन आइ है । भरथ बुलाय समलाय दियो राज सब आप
 भये लोचकर पच महावृत्तधारी है । प्रथम जिनन्द चन्द कहत
 विनोदीलाल ऐसे सत गुरुजी को बन्दना हमारी है ॥

॥ छंद पंच परमेष्ठी नो ॥

आदौ नेमी जिनोमी संभवं सुविधां तथा धर्मनाथं महा-
 देव शार्त्तो शार्त्ती करं सदा ॥ १ ॥ अनन्त मुनि सुभ्रतं भक्त्या
 नमीनाथं जिनोत्तम अजितजीत कदर्पं चन्द्र चन्द्र सम प्रभोः ॥२॥
 आदि नाथ तथा देव सुपासु विमल जिन मल्लीनाथ गुणो प्राप्त
 धनुष पच भितस्यते ॥ ३ ॥ अरेह नाथ महावीर सुमति स्वज
 गत गुरु । श्रीपद प्रभ नामाना भास पूज्य सुरे स्वर नाथ ॥४॥
 सीतल सीतल लोके श्रेयांस श्रेयसे सदा । कुतनाथ चवामेय
 श्रीअभीनन्दन जिन ॥ ५ ॥ जिना नाग नाम भीर वध पच
 सेष्ठी समतन्नपं । यत्रोय राजते अत्र तत्र सेष्य निरन्तर ॥ ६ ॥
 इस मन ग्रहो सदा भगत्या यात्रोय पूजते उधो । भूत प्रेत पिशाचारी
 भय तत्र न भीद्यते ॥ ७ ॥ सकल गुण निदानां यत्र मेदाभी सु
 धारी दय कमल कोसो छे मतग छे रूपा ॥ ८ ॥ जय तिलक
 गुरु श्री सुरीराजस्या सीयो भदति सुखनिदान मोक्ष लक्ष्मी
 निवास ॥ ९ ॥

॥ श्री पार्श्वनाथजी से स्तवन लिख्यते ॥

राग भैरवी

श्री पार्श्वनाथसवाई जिनको कमी रहे नहीं काई ॥ १ ॥
 वनमें मगल रनमें रक्षा अग्न होत सितलाई ॥ १ ॥
 जहा जहा जाये तहां तहां आदर आनद रग वधाई ॥२॥
 कोण करे कोउ द्वेषी जिन वाको बालन चांको थाई ॥३॥
 भजन करे सो नव निध पायें विष अमृत होय जाई ॥४॥

॥ श्री हरकचंदजी महाराज का गुण ॥

सकल सतमें दीप्त गुनी नित हित ध्यावे हरक मुनि ।
तस सेवे सुख संपत्त धावे, श्री हरकमुनिको ध्यावे ॥ १ ॥
जो हरक धरी तुम नाम जपो, सकट दुस्मन राय रयो ।
पर पुत्रादिक दौलत धावे ॥ श्री हर० ॥ १ ॥
भूत प्रेत डारुन शयारी व्याल और नागन काली ।
तुम नाम थकी सब भगजाये ॥ श्री हर० ॥ २ ॥
विकट घाट जल पहाड़ तिहा मृगराज करे गुजार वहाँ ।
नर तत्र थई खुस ले आवे ॥ श्री हर० ॥ ३ ॥
तत्र नाम नराधिप मान लहे, जी जी मुख आगल लोग कहे ।
प्रिय चलम सत्र को मन भावे ॥ हर० ॥ ४ ॥
सुद एकादसी उपवास करो, मन बलित तिनके काज सरो ।
श्रीर विघन नेडो नहीं आवे ॥ हर० ॥ ५ ॥
जो नित जपे तुम जपमाला, तसु कटे असुभ कर्म जाला ।
कुसल चेम कमला लावे ॥ श्री हरख ॥ ६ ॥
श्रीमगन मुनी परसाद थकी शिपरावतरे परतीत पकी,
ते किंचित इम कीरीत गाये । श्री हरख मुनीको जो ध्यावे ॥ ७ ॥



श्री गौतमस्वामी नो स्तवन ।

वीर जिनेश्वर प्रणष्टं पाय गौतम गुण गाऊ चितलाय ॥
सामल जो साहु नरनार श्री गौतम नमे जै जै कार ॥ टेर ॥

जम्बू द्वीप बड़ो सुनाम गौवर गाम कयो सुम ठाम ।

वसुभूत ब्राह्मण सुविचार ॥ श्री गौत० ॥ १ ॥

तिन कुलमाय उपन्या आय, पृथ्वी सुदरी तेहनी माय ।

इद्रभूति प्रगटे कुलधार ॥ श्री गौत० ॥ २ ॥

सकल विद्यामें पूरण भया पचास वर्ष घरवासे रया ।

लीघो वीर समीपे सजम भार ॥ श्री गौत० ॥ ३ ॥

तीस वर्ष छदमस्त पर रया पूछा कर कर सांसा हरया ।

बारे वर्ष केव किरतार ॥ श्री गौत० ॥ ४ ॥

जोत जोत में रया समाय तिणने सुमर्या पातक जाय ।

इयमें सांसो नही है लिगार ॥ श्री गौत० ॥ ५ ॥

जो गौतमरो ध्यानज धरे रोग सोग पीड़ा नहीं करे ।

भूत प्रेत नहीं आवे लार ॥ श्री गौत० ॥ ६ ॥

जो गौतमरो लीजे नाम मन चित्या सब सर्जे काम ।

आत्म सुख पावे सिरदार ॥ श्री गौत० ॥ ७ ॥

गौतम सुमर्या मनकु जांत तिन घर सगली रूढ़ी रीत ।

आपद सकल करे परिहार ॥ श्री गौत० ॥ ८ ॥



श्री चण्णमलजी महाराजना गुण ।

मुनि माहाराज आपरा दरसण कर सुख पाया हो महाराज ॥ टेर ॥
 रियां केरा भासिया बज्रराजजी तात मा०,
 आपरा माता रिघुवाई हो ॥ मा० ॥ १ च० ॥
 उगणीसो नोका समे भाद्र सुक्ल पंच जाण मा०,
 थेतो दशमी के दिन जन्मे हो ॥ मा० ॥ २ ॥
 माता आनद पामियो, निरखी पुत्र दिदार मा०,
 थेतो हर्ष हर्ष हृलरावे हो मा० ॥ ३ ॥ च० ॥
 अनुक्रम में मोटा हुआ माता राखे लाड़ मा०,
 थाने हित घर बहुत पढ़ावे हो मा०, ॥ ४ ॥ च० ॥
 उगणीसो बीसा समे जेष्ट कृष्णपंच जाण मा० ।
 थेतो पंचमी के दिन शुभ कारी हो मा० ॥ ५ ॥ च० ॥
 लगुण्य में सयम लियो पाली सहर मजार मा०,
 थाने कनीराम गुरु मिलिया हो मा० ॥ च० ॥ ६ ॥
 बुद्धि तीखी आपकी लियो विनय सुग्यान मा०,
 थाने सतगुरु बोत सरावे हो मा० ॥ च० ॥ ७ ॥
 छत्र चांचो चूपसे भिन्न भिन्न करो व्याख्यान मा०,
 थारा नरनारी गुण गावे हो मा० ॥ च० ॥ ८ ॥
 अम्रत धारा आपकी सुरत लेह अनेक मा०,
 थारी महिमा अपरपारी हो मा० ॥ च० ॥ ९ ॥
 चरचा में चोकम गणा अनुमत आवे चाल मा० ।
 वाने हित घर बहु समजावो हो मा० ॥ च० ॥ १० ॥
 खेम मुनी सग सोहता हस गुणा गभीर मा०,
 ए तो मोजराज वेरागी हो मा० ॥ च० ॥ ११ ॥

मायत विरध विचारने गुनो करो बखमीम मा०,
 मारी नैया पार उतारो हो मा० ॥ च० ॥ १२ ॥
 उगणीसे चोसट में पीपाढ़ सेखे काल मा०,
 एतो माहासुद पचम गाया हो मा० ॥ च० ॥ १३ ॥
 सरणे आयो आपके दीजो पार उतार मा०,
 थारा सुजाण एह गुण गाया हो मा० ॥ च० ॥ १४ ॥

श्री सीतलनाथजीनो स्तवन ।

श्री शीतल जिन साहजाजी सुन सेवक अरदास ।
 शिवदाता वृधता हरी थे दो शिवपुर वास,
 जिनेश्वर वंदिये जी पोह बगत सूर जिनेश्वर वदिये जी,
 पामे परमानद जिनेश्वर वदियेजी दुख टलजावे,
 दूरक पाप निकदिये जी, पामे सुख भरपूर जिनेश्वर वदियेजी ॥ टेर ॥
 काम भोगनी लालसा थिरतन धरे मन,
 पिण तुम भजन प्रताप थी दाजे दुरमत वन ॥ जि० ॥ १ ॥
 लोह अड़े पारस जाइजी सोनो न हुवे तेह,
 लोहनो सुवीगड़पिण पारस पड़े सदेह ॥ जि० ॥ २ ॥
 चिंतामण संग्रहाजी नर सुखियो नहीं होय,
 जद मनमें सका पड़े ओ रतन न दीखे कोय ॥ जि० ॥ ३ ॥
 निसदिन सेवा सारताजी सामसरे जे काम,
 जिणरी इधकाइ किमी पिण होय तार्याको नाम ॥ जि० ॥ ४ ॥
 सेवक साहब ने इयांजी काम न सारे कोय,
 चाकर ने सुमेहणी पिण मोटा ने होय ॥ जि० ५ ॥

बालक जो हट हाँ करे जी तो हारे माई ॥
हूँ बालक तुम आगले बोलु छु इण रीत ॥ जि० ॥ ६ ॥
सबत अठारे पचानने जी मेधनीपुर मज ठाम ॥
पूज्य गुमानचदजी प्रमाद से रत्र करे गुणगान ॥ जि० ॥ ७ ॥
चेतन तु ही तारसी जी तुम परमेश्वर रूप ॥
पिण प्रभुना गुण गावताजी पगटे निज स्वरूप ॥ जि० ॥ ८ ॥

॥ श्री महावीर स्वामी नो स्तवन ॥

तीरथनाथ मिधारथ सुतका नित नित सुमिरन कीजे ॥
दिन दिन उधे सवाइ प्रभुता सकल मनोरथ सीजे ॥ टेर ॥
जिण घर कल्पवृक्ष चित्र मेली काम धेनु दुहीजे ॥
काम कुम्भ चिन्तामण्य पारस वज्रत भोग लहीजे ॥ १ ॥
तिण स अधिक रूप प्रभुजी को जो निशे चित दीजे ॥
जिण घर कुमि रहे नहीं कांइ रिद्ध सिद्ध वृद्ध पामीजे ॥ २ ॥
पुद्गल वस्त सकल इन भवकी मिली यथा लग लीजे ॥
प्रभू का नाम मिले जो सपत मन भव आखे कहीजे ॥ ३ ॥
ज्यु पणीपारण को चित कुम में त्यों प्रभू में चित दीजे ॥
विनमचद आपो शिष्य सुखनो जो निश्चल चित दीजे ॥ ४ ॥



श्री पारश्वनाथजी नो स्तवन ।

पास प्रभू आस पुरो देवो शिवपुर वासजी,
 त्रास गर्भावास भेटो हु थारो चरणा रो दास ॥
 प्रभू मानै एक आपरो आधार ॥ १ ॥
 ऊठत बैठत सोवत जागत बसरयो हृदय मजार ॥ १ ॥
 मात तात और नाथ तुही तु खावद किरतार ॥
 सज्जन बलम मित्र तुही तुहीज तारण हार ॥ २ ॥
 प्रभू कैयक पर्वत पहाड़ तरघर सरघर नावत गग ॥
 माने तो तन मन वचन करने एक तुम सुरग ॥ ३ ॥
 हु मतहीन लेलीन जग में पुद्गल ने परपच ॥
 अचगुण भरियो देख साहब आप माडीखंच ॥ ४ ॥
 भवसागर में बहु विध भटक्यो,
 पुद्गलपुरी अनेक छेदन भेदन बहोत पामी ॥
 अत्र तो सामो देख ॥ ५ ॥
 सरणे आता जज कितरी जो साहब सिरदार ॥
 छोह कचन होत छिन में पस्र्या पारपनाथ ॥ ६ ॥
 काष्ट फाड़ी नाग काढ्यो सिमेरे वो नरकार ॥
 धरणिन्द्र पद्मावती हुवो ओ प्रभु नो उपकार ॥ ७ ॥
 गरिवनवाज नृद्ध निहारो तारीजो माहाराज ॥
 सेवक निज सरण आयो आपने ज्ञान लाज ॥ ८ ॥
 कमठमन भजन सुखदाता भय भंजन भगवत ॥
 विनयचद करजोर वीनवे नीचे नमावे सीस ॥ ९ ॥

(स्तवन उपदेशी)

हा उमर अंजन ज्यु जाये ॥

नर जाणै दिन जाय दिन जाणै नर जाये रे ॥ टेरे ॥
 पव इन्द्रियाँ को अजन भारी दसों दवार गाड़ी सभ त्यारी ॥
 पाप पुन गाई गाड़ी को बग चलाये रे ॥ १ ॥ हा उमर ॥
 चले रेल ज्युं साम उसामा पिना तार चलने नहीं आसा ॥
 खरदार जट होय मुसाफिर गाड़ी आवेरे ॥ २ ॥ हा० ॥
 दया धर्म का टिगट बनाया साच भूठ दोय गानू आया ॥
 सांच को नहीं है आंच भूठ कु परा फुकायारे ॥ ३ ॥ हा० ॥
 मास दिनस की बणौ है चौकी एक वर्ष स्टेशन देखी ॥
 बीते वर्ष जन कोई स्टेशन जकसन आवेरे ॥ ४ ॥ हा० ॥
 जकसन उपर तुरतज रोके दया धर्म का टिकटज देखे ॥
 माया कुटुम्भ परवार उठे नहीं अर्थ न आवेरे ॥ ५ ॥ हा० ॥
 अजन उपरे ओफिसर भारी साच भूठ की करे निरधारी ॥
 देख दया टिकट मुक्त कु तुते पहुचायेरे ॥ ६ ॥ हा० ॥
 चार गती में भूक्यो भटक्यो मोह माया में उर्यो अटक्यो ॥
 जनरमल कहै जीव प्रभु का गुण क्यो नहीं गावेरे ॥७॥ हा० ॥

(स्तवन उपदेशी)

दम का नहीं भरोसा रे करले चलने का सामान ॥
 लस चोरामी भ्रम के आयो गर्म क्रिया अस्थान ॥१॥ दम० ॥
 उत्तम कुल में जन्म लियो है मुख में खान और पान ॥
 भीर पडिया तेरे कोई न साथी साथी पुन और पाप ॥ दम० ॥२॥

आसा तृष्णा भूख और निद्रा कुमत रूप निधान ॥
 दिन दिन बधे पाप का संगत व्यापो क्रोध और मान ॥ दम० ॥३॥
 भूटा सब ही जगत पसारा नारी विष की खान ॥
 माया लोभ भयो अब अधिको व्यापो गर्भ अभिमान ॥ दम० ॥४॥
 पांचो चार मुसाफिर तेरे इन की खोटा वाण ॥
 इतना चोर बधे तो अन्दर मोह बड़ा सुलतान ॥ ५ ॥ दम० ॥
 दो दिन का है गोकुल रामा घर तिरिया खान ॥
 काल बेरी थारे मिरपर खेले सांधि रयो हे वान ॥ ६ ॥ दम० ॥
 भाड बध सय सगा सम्बन्धी राखे थारो मान ॥
 अत समे कोई काम न आवे किमो मान गुमान ॥ ७ ॥ दम० ॥
 जप तप सील करो सत संगत साधु सुपात्र दान ॥
 सेरो साधु पच महा ब्रतधारी प्रभु भज तज अभिमान ॥ ८ ॥ दम० ॥

॥ श्री नेमनाथजी रो स्तवन ॥ देशी भूलारी ॥

नेमी सिर बनड़ा ने गिरनारी जाता राखालीजोए ।
 सयां मोरी राखलीजोए सयां ए,
 मारा नेमी सिर बनड़ा ने गिरनार जाता राखलीजोए ॥ टेरे ॥
 समन विजयजी का लादला ए माय, स० ।
 हलधर दोनोइ लार पिताजी जाय कहिजोए ॥ १ ॥ सया० ॥
 नेमी सिर बनड़ो घणयो ए माय, स० ।
 खूब बणी छे उरात ऊचा चढ़ जाक लीजोए ॥ २ ॥ सया० ॥
 नेमी सिर तारण आवीयो ए माय, स० ।
 पसुवारी सुयी पुकार पाछो रथ फेर लीनोए ॥ ३ ॥ सया० ॥

तोड्या छे कांकण डोरडा ए माय, स० ।

ताड्या छे नवसर हार दिचा बन जाय लीनीए ॥ ४ ॥ सर्यां० ॥

अच हु अविग्रो छांडसु ए माय, स० ।

जाय मिलू गिरनार कर्म फल तोड लेसुए ॥ ५ ॥ सर्यां० ॥

सेवक सुभ चितवे ए नाय, स० ।

मागु छु शिवपुर वास अर्ज मेरी मान लीजो ए ॥ ६ ॥ सर्यां० ॥

(स्तवन उपदेशी) राग बिहाग ॥

यह भेद सील का जाने जो हे सतवंती नारी ॥ टेरे ॥

पर पुरुषों से बात न करणा, लम्पट जन का साथ न करणा ।

परघर वासा रात न रहणा, काम कथन मत गारी ॥१॥ जो०

एक आसन पर कबहु न बैठो, पर पुरुषन का साथ न भेटो ।

पिता भ्राता पति तुम भेटो, बनो कुटुम्बी प्यारी ॥ २ ॥ जो०

पर पुरुषों का अंग ना निरखें, अंग कीरत सुख मन मे पत हरये ।

कुटुल सरल को मन में परखो, तुम भूमी नीगे रस चालरी ॥३॥ जो०

हाट बाट में खड़ीयन रहना, अकेली घर में नहीं सोना ।

जेनी समय वृथा नहीं खोना, लीजे सुजस बधारी ॥४॥ जो०

स्तवन लावणी ।

खबर नही या जुग में पलकी रे, खबर नही या जग में पल की रे ।

सुकत करणा होय तो करले कुछ जाये कलकी रे ॥ टेरे ॥

या दोस्ती है जंगल वास की काया मडल की ।

स्वामो स्वास सुमरले साइन आयु घटे पलकी ॥१॥ खबर०

आसा तृष्णा भूख और निद्रा कुमत् रूप निधान ॥
 दिन दिन बधे पाप का संगत व्यापो क्रोध और मान ॥ दम० ॥
 झूठा सब ही जगत पसारा नारी विष की खान ॥
 माया लोभ भयो अथ अधिकों व्यापो गर्भ अभिमान ॥ दम० ॥
 पांचो चार मुसा फिर तेरे इन की खोटा वाण ॥
 इतना चोर बसे तो अन्दर मोह बड़ा सुलतान ॥ ५ ॥ दम० ॥
 दो दिन का है गोकुल रामा घर तिरिया खान ॥
 काल बेगी थारे सिरपर खेले साधि रयो हे नान ॥ ६ ॥ दम० ॥
 भाइ बध सब सगा सम्बन्धी राखे थारो मान ॥
 अत समें कोई काम न आवे किमो मान गुमान ॥ ७ ॥ दम० ॥
 जप तप सील करो सत संगत साधु सुपात्र दान ॥
 सेयो साधु पच महा ब्रह्मधारी प्रभु भज तज अभिमान ॥ ८ ॥ दम० ॥

॥ श्री नेमनाथजी रो स्तवन ॥ देशी भल्लारी ॥

नेमी सिर बनड़ा ने गिरनारी जाता राखलीजोए ॥
 सयां मोरी राखलीजोए सयां ए,
 मारा नेमी सिर बनड़ा ने गिरनार जातां राखलीजोए ॥ टेरे ॥
 समन विजयजी का लाडला ए माय, स० ।
 हलधर दोनोड लार पिताजी जाय कहिजोए ॥ १ ॥ सया० ॥
 नेमी सिर बनड़ो घणयो ए माय, स० ।
 खुब बखी छे बरात ऊचा चढ़ जाक लीजोए ॥ २ ॥ सयां० ॥
 नेमी सिर तारण आवीघो ए माय, स० ।
 पसुवारी सुखी पुकार पाछो रथ फेर लीनोए ॥ ३ ॥ सयां० ॥

तोड्या छे कांकण डोरडा ए माय, स० ।

तोड्या छे नवसर हार दिचा बन जाय लीनीए ॥ ४ ॥ सयां० ॥

अब हु अग्रिग्री छोइसु ए माय, स० ।

जाय मिलू गिरनार कर्म फल तोइ लेसुए ॥ ५ ॥ सयां० ॥

सेवक सुभ चितवे ए नाय, स० ।

मागु छु शिवपुर वास अर्ज मेरी मान लीजो ए ॥ ६ ॥ सयां० ॥

(स्तवन उपदेशी) राग बिहाग ॥

यह भेद सील का जाने जो हे सतयती नारी ॥ टेरे ॥

पर पुरुषों से बात न करणा, लम्पट जन का साथ न करणा ।

परघर वासा रात न रहणा, काम कथन मत गारी ॥१॥ जो०

एक आसन पर कमहु न बैठो, पर पुरुषन का साथ न भेटो ।

पिता भ्राता पति तुम भेटो, बनो कुदुम्भी प्यारी ॥ २ ॥ जो०

पर पुरुषां का अग ना निरखें, अंग कीरत सुग्य मन में मत हरेपे ।

कुदुल सरब को मन में परखो, तुम भूमी नीगे रग्य चालरी ॥३॥ जो०

हाट चाट में खड़ीयन रहना, अकेली घर में नही सोना ।

जेनी समय वृथा नहीं खाना, लीजे सुनस चधारी ॥४॥ जो०

स्तवन लायणी ।

खबर नही या जुग में पलकी रे, खबर नही या जग में पल की रे

सुकत करणा होय तो करले कृण जाये कलकी रे ॥ टेरे ॥

या दोस्ती है जगल वाम की काया मडल की ।

स्वामो म्याम मुमरले माइव आयु घंटे पनकी ॥

तारा मडल रवी चन्द्रमा सबही चलने की ।
 दिवस चार का चमत्कार ज्यों त्रिजली जलकी ॥२॥ खबर०
 कूड़, कपट कर माया जोड़ी कर चातां छलकी ।
 पापकी पोटली बांधी सिर पर कैसे होय हलकी ॥३॥ खबर०
 या जुग है सपना की माया जैसे बूद है जलकी ।
 विणसता तो वार न लागे दुनिया जाय खलकी ॥४॥ खबर०
 मात तात सुत बंधु भाइ सब जग मतलब की ।
 काया माया नार हवेली ए थारी कबकी ॥५॥ खबर०
 मन भावत तन चञ्चल हस्थी मस्ती है बलकी ।
 सतगुरु अकृष धरो सीस पर चल मारग सतकी ॥६॥ खबर०
 जबलग हमा रहे देह में सुखिया मंगल की ।
 हंमा छोड़ चले जब देही मटिया जगल की ॥७॥ खबर०
 पर उपकार सम नहीं सुकत घर समता सुखकी ।
 पाप नहीं पर प्राणी पिंडन हर हिंसा दुखकी ॥८॥ खबर०
 कोइ गोरा कोइ काला पीला नयन निरखन की ।
 ए देखी मत राचो प्राणी रचना पुद्गल की ॥९॥ खबर०
 अनुभव ज्ञान आतम बुजी कर बाता सत की ।
 अमर पद अरिहत को ध्याया पदवी अविचलकी ॥१०॥ खबर०
 दया धर्म साहब को सुमरण ए बाता सत की ।
 राग द्वेष उपजे नहीं जिनको चीनती अखमल की ॥११॥ खबर०



॥ स्तवन नेमीनाथजी नो ॥

रगीला नेमजी माने दरसण दो माहाराज ॥ टेरे ॥

समद विजय सुत साभलो जी सेवा देजी को नन्द ।

द्वारवतीना राजीया माने दीठा आवे छे आनन्द ॥१॥ रगीला०

जीवदयारे कारणेरे पसुवारी सुणी पुकार ।

गुण अगुण मुज पालणा स्वामी कहीं छोड़ी निरधार ॥२॥ रगीला०

हूस हुती मन म गणीजी भेटण से भरतार ।

ए सुख में किम वीमरुजी मुक्त गया निरधार ॥३॥ रगीला०

नमव केरो नेहडारे, ओ किम छूटत नेम ।

हु जाणती मन में गणीरे निपट निरजन नेम ॥४॥ रगीला०

तुमझे नेमीश्वर सांगलाजी राजन रे मन रग ।

दे दिचा स्वामी हाथ सुजी मुक्त मलो माहाराज ॥५॥ रगीला०

तिर्थकर बापीस माजी सीलवत सिरदार ।

सती सेवक सु वीणतीजी होइजो चारम्भार ॥६॥ रगीला०

स्तवन उपदेसी ।

ओजुग जाल सपनरी माया हमपर क्यों गरनाखारे
घटगई आयु रहन नहीं पावे क्या राजा क्या राणारे । टेरे

सुदर नार सड़ी मुख आगल रूप देख हर्षानारे.

आत्मज्ञान हतो नहीं देख सेवट पास मसाणारे ॥ १ ओ० ॥

गादी बेस गर्व अति तोले बोले मगज भराणा

अंतर ग्यान करीने देखो कई गया राम अरु राणारे ॥२ओ०॥

कर कर रूपट निपट धन मेढ्यो संच सच एक दाणोरे,
 मद छकिया मन में नहीं सोचे सेवट माल विराणोरे ॥३ ओ०॥
 थोड़ा दिवस कर्म बहु बांध्या कर कर ने कमठाणोरे,
 आत्म ग्यान करीने देखो सेवट निपट पयानारे ॥ ४ ओ० ॥
 झुधित पुरुष सीसतल छाया जाणे घेवर पेठा भराणोरे
 उडगई नींद खुली दोग अंख्या अत छाणे का छाणोरे ॥५ओ०॥
 सपने राज लिया सत्र जग का सिर पर छत्र धराणोरे,
 जागे पात्र छत्र की जागा मांग मांग अन खाणोरे ॥६ ओ०॥
 रत्नचंदजी जुग देखी यथारथ निज गुण मन ठहराणोरे
 अक्ष लिख्यो सतगुरु वचने पुद्गल भर्म मिटाणोरे ॥७ओ० ॥

स्तवन उपदेशी ।

चार पोरसो दिन हुवरे लाल चार पोररी रातरे ।
 सुजाण नर दोग घड़ी कर आपणोरे लाल ॥
 परभव सुखियो थायरे सुजाण नर
 कोई चातुर विचारने चेतज्योरे लाल ॥ टेर ॥
 साधु कहे साभलोरे लाल आल जजाल में मत हार रे ॥ सु० ॥
 अल्प सुखोरे कारणे रे लाल परभव दुखियो थायरे ॥१ सु० ॥
 मात पिता सुत कामनी रे लाल अल्प दिनरो वासरे ॥ सु० ॥
 भोला लोग समझे नहींरे लालरे वे त्रियारे पासरे ॥ २ सु० ॥
 बाढ बढ़ा राणा राजवी रे लाल बढ़ा बढ़ा भोपालरे ॥ सु० ॥
 मुछडन्ध्या चल गालता रे लाल ज्याने लेगयो कालरे ॥ सु० २ ॥
 केड नर हीडे हीडता रे लाल बहु नारी जारे लार रे ॥ सु० ॥

मरण कदेई नहीं जाणावा रे लाल जानेई लेगयो कालरे ॥४॥ सु॥
 अब हटवाड़े हृद मिन्यारे लाल मिली मिली गोता खायरे सु०
 इण मव में चेत नहीं रे लाल परभव दुखियेय थायरे ॥ सु० ५ ॥
 आगा तो नेजा फरहरे रे-लाल पड़े नगारारी घोर रे ॥ सु० ॥
 ऊबो तजे यो धरमारे लाल जोरन लागे लिगाररे ॥ सु० ६ ॥
 फौजां तो घणी अति फूटरी चढ़गया सगले इतिहासरे सु० ॥
 परमारथ पोते नहींरे काल धिचमें लेगयो कालरे ॥ सु० ७ ॥
 भरत याहुमल भूभतारे लाल लाखों फौजां जारी लाररे ॥ सु० ॥
 मरण थकी उख डरपिया रे लाल छोड दियो संसाररे ॥ सु० ८ ॥
 धदो करीने धन जोडियारे लाल लाखां ऊपर करांड रे ॥ सु० ॥
 मरणरी वेला मानवीरे लाल लेसी कदोरो तोडरे लाल ॥ सु ९

स्तयन श्री पूज्य सोभाचंदजी महाराज का गुण ।

दर्शन हालोरे हारे २ झारा पुण्य पूज्य पधार्यारे ॥ देर ॥
 जेपर नागोर विचरत २ उपकार घणोरो करतारे
 धन्य भाग घस्तीका लोगां सुगन मनावारे ॥ १ ॥ दर्स०
 होय केसरिया और कमलपल नर नारी रा वृद्धोरे-
 होडा होडी सव मिल चान्या धर ध्यानदो रे ॥ २ ॥ दर्स०
 हाथी घोड़ा रथ पालकी कोई मेना पर चदियारे
 सेठ सेनापति और सब कोई पांवां पर परिया रे ॥ ३ ॥ दर्स०
 चतुरगी सेन्या सज आया राजा महाराजा भारीरे,
 सन्मुख बेटे श्री सोभाचंदजी मुनि के खुली खुली सीसनमांचेरे ॥ ४ ॥

सारी परखदा बैठो सामने जिनजीरा गुण गावेरे
 प्रभु मुख वाणी सुण कर अति हुलसावेरे ॥ ५ ॥ दर्शन०
 केइ बडभागी होय बैरागी संयम का वृत लीधारे
 केइ द्वादश वृत आदरियारे ॥ दर्शन० ६ ॥
 उगणी सो साल सततरे वैशाख कृष्ण सुभकारिरे
 तिथ वेरस ने पुज्य प्रभु का गुण गायारे ॥ दर्शन० ७ ॥

स्तवन श्री महावीर स्वामीनो ।

महावीर स्वामी, नैया लगादे मोरी पार हो,
 वृधभान स्वामी नैया लगादे मोरी पार ॥ टेर ॥
 यो भवजल अथाग भयो है,
 एक आप तखारे आधार ॥ हो मा० ॥ १ ॥
 कुडुम्य कधीलो, मतलब को गरजी,
 भिन मुतलब नहीं पूछे सार ॥ हो मा० ॥ २ ॥
 जो प्राणी जगजाल में फसीयो,
 वो खावेला जम की मार ॥ हो न० ॥ ३ ॥
 तन धन जोवन वीजु को भल को,
 जाता नहीं लागे वार ॥ हो मा० ॥ ४ ॥
 आस लगी तो पूरण कीजे,
 जन्म मरण निवार ॥ हो मा० ॥ ५ ॥
 इम जाणी ने सरण गहु छु,
 जिनजी है तारण हार ॥ हो मा० ॥ ६ ॥
 चोधमल की अरज सुनी जो,
 राती के करार ॥ हो सा० ॥ ७ ॥ सम्पूर्ण

(अथ चौबीसी लिखते)

चतुरविंशती ने मैं गास्यां माने जिनजी को हे जी माने
 प्रभुजी को नाम नीको लागे है माय आछो लागे है माय ॥टेर॥
 रिखभ अजित सभव स्वामी,
 अर्भानन्दन हित हुलरास्या ये माय,
 सुमत पदम सू पासजी चदा प्रभुजी,
 सू लगन लगास्या हे माय ॥ चतुर० ॥ १ ॥
 सुबुद्धि सांतल श्रीयांसजी वास पूज्य,
 चरण चित लास्या हे माय,
 विमल अनत धर्म ध्यान सू सातीनाथ,
 गुण गाय सुख पास्या हे माय ॥ चतुर० ॥ २ ॥
 कुयु अरिजी मन्लीनाथजी मुनी सो धृत,
 गुणा जीव रमास्या हे माय ।
 नमोय नेम पार्य धणी सांसणपत,
 वृधमान मनास्या हे माय ॥ चतुर० ॥ ३ ॥
 अनत चौबीसी ने नित नमु गणधर,
 सोहु सीस नमास्या हे माय ।
 वर्तमानजी ने चदस्या,
 परमेष्टी जाप जपास्या हे माय ॥ चतुर० ॥ ४ ॥
 चार बीस जिनराज ने हित चित,
 दिल हट धर ध्यास्या हे माय ॥ चतुर० ॥ ५ ॥

सारी पख्खदा बैठो सामने जिनजीरा गुण गावेरे
 प्रभु मुख वाणी सुण कर अति हुलसावेरे ॥ ५ ॥ दर्शन०
 केइ बडभागी होय वैरागी समय का वृत लीधारे
 केइ द्वादश वृत आदरियारे ॥ दर्शन० ६ ॥
 उगणी सो साल सततरे वैशाख कृष्ण सुभकारिरे
 तिथि तेरस ने पुज्य प्रभु का गुण गायारे ॥ दर्शन० ७ ॥

स्तवन श्री महावीर स्वामीनो ।

महावीर स्वामी, नैया लगादे मोरी पार हो,
 वृधमान स्वामी नैया लगादे मोरी पार ॥ टेर ॥
 यो भवजल अथाग भयो है,
 एक आप तयारे आधार ॥ हो मा० ॥ १ ॥
 कुडुम्य कधीलो, मतलब को गरजी,
 तिन मुतलब नहीं पूछे सार ॥ हो मा० ॥ २ ॥
 जो प्राणी जगजाल में फसीयो,
 वो खावेजा जम की मार ॥ हो न० ॥ ३ ॥
 तन धन जोवन बीजु को भल को,
 जाता नहीं लागे वार ॥ हो मा० ॥ ४ ॥
 आस लगी तो पूरण कीजे,
 जन्म मरण निवार ॥ हो मा० ॥ ५ ॥
 इम जाणी ने सरण गहुं छु,
 जिनजी है तारण हार ॥ हो मा० ॥ ६ ॥
 चोधमल की अरज सुनी जो,
 वृषलादे राजीके कँवार ॥ हो मा० ॥ ७ ॥ सम्पूर्ण

(अर्थ चौबीसी लिखते)

चतुरविंशती ने मैं गास्यां माने जिनजी को हे जी माने
 प्रभुजी को नाम नोको लागे है माय आछो लागे है माय ॥टेर
 रिखभ अजित संभव स्वामी,
 अर्भानन्दन हित हुलरास्या ये माय,
 सुमत पदम सू पामजी चदा प्रभुजी,
 सू लगन लगास्या हे माय ॥ चतुर० ॥ १ ॥
 सुबुद्धि सांतल श्रीयांसजी वास पूष्य,
 चरण चित्त लास्या हे माय,
 विमल अनत धर्म ध्यान सू सांतीनाथ,
 गुण गाय सुख पास्या हे माय ॥ चतुर० ॥ २ ॥
 कुपु अरिजी मन्लीनाथजी मुनी सो वृत्त,
 गुणा जीव रमास्या हे माय ।
 नमोय नेम पार्य धणी सांसणपत,
 वृधमान मनास्या हे माय ॥ चतुर० ॥ ३ ॥
 अनत चौबीसी ने नित नमु गणधर,
 सोहु सीस नमास्या हे माय ।
 वर्तमानजी ने बदस्या,
 परमेष्टी जाप जपास्यां हे माय ॥ चतुर० ॥ ४ ॥
 चार बीस जिनराज ने हित चित्त,
 दिल दद धर ध्यास्या हे माय ॥ चतुर० ॥ ५ ॥

(॥ स्तवन - उपदेसी ॥)

भलाई करलेरे वदा २ इण मृत्युलोक के माय
चतुर नर क्यों हो रहा अधा ॥ टेर ॥

यो जग है सपने की माया, तड़को होय आवे ।

राजा रक फकीर बादसाह, मारग पकड़ जावे ॥ भलाई ० ॥ १ ॥

थारी तुल्ल जिंदगानी सुन अभीमानी, सतगुरु की वाणी,

पाणी ऊपर हुवे बुदबुदो, फिर पानी को पानी ॥ भलाई ० ॥ २ ॥

तन धन जोवन रग पतग, सम देखत बिलगावे,

जिम वाड़ी में फूल फूलियो छिनमें कुमलावे, ॥ भलाई ० ॥ ३ ॥

मात पिता त्रिया सुत बधु इण से मोह ज्यावे,

काल आण जद गाटी पकड़े चैठो ढलक जावे ॥ भलाई ० ॥ ४ ॥

पाप पुण्य की खरची लेकर परभव सीधावे,

दुख भुगतणरी त्रिरिया थान कोई, न छुड़ावे, ॥ भलाई ० ॥ ५ ॥

तिर्यकर चक्रीबल देवा मडलीक राया,

वासुदेव अवतार अन्नलिय, सवी काल खाया ॥ भलाई ० ॥ ६ ॥

रावण तीन खड को राजा रामत्रिया लायो ।

लिछमण हाथ मराणो रिण में ॥

कवियां मुख गायो ॥ भलाई ॥ ७ ॥

आठ पोर री साठ घड़ी में सुकृत कर लेरे ।

दोय घड़ी प्रभृजी रा भजन री, हिरदे धर लेरे ॥ भलाई ॥ ८ ॥

राजा कर्ण हुवा दानेश्वर अजु का कीर्ति गायी है ।

उगता नामज लेवे सनके मन भावे ॥ भलाई ॥ ९ ॥

उगणी से पनरा के वर्षे जोधाणा मोही ।

कानी मोहाग पचमी हिमतराम गई ॥ भलाई ॥ १० ॥

स्तव्य प्रभु गुण लिखते ।

आनन्द अग रंग सु प्रभु के गुण गाइये,
जिनेद्र गुण गाइये प्रभु० टेर ॥
प्रभु के अपार गुण मेरे मन भाइये,
उमंग धरं गावे जाँका पाप भर जाइये ॥ आनन्द ॥ १ ॥
अनग कु विडार एकाग्र चित गाइये,
कसाय के कसायताने दूर हु नसाइये ॥ आनन्द ॥ २ ॥
प्रेमी विद्ध भक्त भाव प्रेम सु रचाइये,
समता की सहेली सग मोज खुब पाइये ॥ आनन्द ॥ ३ ॥
प्रभु को सुजस जग के तू फरकाइये,
आगम सुध लेई हम प्रमोदित थाइये ॥ आनन्द ॥ ४ ॥
प्रभु के समो सरण वादे चल आइये,
देखत दिदार सिर तुरत ही नमाइये ॥ आनन्द ॥ ५ ॥
प्रभु गुण गाते गीत तीर्थ कर बघाइये,
देखो दास की नर राय तेसे भाव क्याइये ॥ आनन्द ॥ ६ ॥
दरस सरस सुख मोकुमी बताइये,
सुजाण कीये आस प्रभु पूर्ण कराइये ॥ आनन्द ॥ ७ ॥



सेवक की (सूचना सब भाइयों को देने में आती है) की जिसको पुस्तक मगाने की जरूरत हो उसने हमारे नीचे लिखे पते से मगावे बिना मूल्य भेज देते हैं तथा नीचे लीखे उस पुस्तक की तथा उस पाने की चावना होवे सो बिना मूल्य भेजते हैं मंगाने की कृपा करे ऐसी हमारी नम्र चीनती करके कहना और पुस्तक को जतना से रखें खुला मुछ कर न बाचे ।

१-जैन साख्रमाला तीन ३ भागई

२-सामायक माहा लाभ का पाना

आपका

सिरेमल लालचंद मुथा

पीपाड़ मारवाड

गुलेदगढ

